॥ ओ३म् ॥

दयानन्दसन्देश

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का मासिक पत्र

Date of Printing = 05-12-22
प्रकाशन दिनांक = 05-12-22

दिसम्बर २०२२

वर्ष ५२ : अङ्क २
दयानन्दाब्द : १९८
विक्रम-संवत् : कार्तिक-मार्गशीर्ष २०७९
सृष्टि-संवत् : १,९६,०८,५३,१२३

संस्थापक : स्व० ला० दीपचन्द आर्य
प्रकाशक व सम्पादक : धर्मपाल आर्य
व्यवस्थापक : विवेक गुप्ता

कार्यालय :

दयानन्दसन्देश (मासिक)
४२७, मन्दिर वाली गली, नया बांस,
खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : २३९८५५४५, ४३७८११९१
चलभाष : ९६५०५२२७७८
E-mail : aspt.india@gmail.com

कुल पृष्ठ २८
एक प्रति १५.०० रु०

वार्षिक शुल्क १५०) रुपये
पंचवर्षीय शुल्क ५००) रुपये
आजीवन शुल्क ११००) रुपये
विदेश में ५०००) रुपये

इस अंक में

- वेदोपदेश २
- बलि प्रथा अभी भी जिन्दा है ३
- मनुष्य शरीर-एक घोड़ा गाड़ी ५
- पुरुष सूक्त में पशु सृष्टि विषयक ६
- मृत्यु का अद्भुत दृश्य ९
- अब इंसाफ कहाँ मिलेगा ? १०
- शांति की खोज १२
- एक देश दो विधान आखिर क्यों ? १३
- क्रांतिवीर विनायक दामोदर सावरकर १५
- आओ, श्रद्धामय हो जाएं १८
- बेटी पढ़ाओ, देश धर्म बचाओ २०
- ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव २२
- आर्यसमाज का तप २४
- कर्मफल सिद्धान्त- २७

विशेष : दयानन्द सन्देश में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनसे सम्पादक की पूर्णतया सहमति आवश्यक नहीं है। अतः किसी भी चर्चा/परिचर्चा एवं वाद-विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

सत्यार्थप्रकाश

प्रचार संस्करण – ४००० रुपये सैकड़ा
स्पेशल (सजिल्द) – ६००० रुपये सैकड़ा में प्राप्त करें।

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। —महर्षि दयानन्द

वेदोपदेश—आ यद्योनिं हरिण्ययमाशुर्ऋतस्य सीदति । जहात्यप्रचेतसः ॥
अभि वेना अनूषतेयक्षन्ति प्रचेतसः । मज्जन्त्यविचेतसः ॥

—ऋ० ९।६४।२०,२१

शब्दार्थ—आशुः = भोक्ता जीव **यत्** = जब **ऋतस्य** = ऋत की **हिरण्ययम्** = हितरमणीय, चमचमाती **योनिम्** = योनि में, ठिकाने में **आ+सीदति** = आ बैठता है, तब वह **अप्रचेतसः** = अज्ञानियों को **जहाति** = छोड़ देता है। **वेनाः** = बुद्धिमान्, मेधावी, कमनीय महात्मा **अभि+अनूषते** = अभिमुख होकर स्तुति करते हैं **प्रचेतसः** = ज्ञानी, उत्तम समझदार **इयक्षन्ति** = यज्ञ करते हैं, दान करते हैं, सत्सङ्ग करते हैं, प्रभु पूजा करते हैं और **अविचेतसः** = अज्ञानी, अचेत **मज्जन्ति** = डूब मरते हैं।

व्याख्या—इन दो मन्त्रों में ज्ञानी-अज्ञानी की पहचान बताई गई है। वेद के सीधे-सादे, हृदय तक पहुँचने वाले शब्द कितनी गम्भीर बात का कैसा सरल विवेचन करते हैं !

ज्ञानी की पहली पहचान यह है कि वह ऋत का, सत्य का, सृष्टि नियम का अनुगामी होता है। सृष्टि नियम के अनुगमन का फल उसे उत्तम अवस्था मिलती है। मूढ़ लोग सृष्टि नियम को जानते ही नहीं, न उसे जानने का यत्न करते हैं, बतलाने पर उसे ग्रहण करने की चेष्टा भी नहीं करते, अतः ज्ञानी इनका सङ्ग छोड़ देता है।

बुद्धिमान् की दूसरी पहिचान यह है कि वह भगवान् की स्तुति करता है। ज्ञानीजन सदा यज्ञ करते हैं। लोगों को ज्ञानदान, अन्नादि से तृप्त करते हैं, श्रेष्ठ पुरुषों की संङ्गति करते हैं, प्रभुपूजा करते हैं। ज्ञान का फल भी यही है कि वह भले-बुरे की पहचान करके भले का ग्रहण और बुरे का त्याग करे। जैसाकि वेद में कहा है—

चित्तिमचित्तिं चिनवद् वि विद्वान् । —ऋ० ४।२।११

विद्वान् ज्ञान और अज्ञान की विशेष पहचान करे, अर्थात् पण्डित का कर्तव्य है कि उचित-अनुचित का यथायोग्य विवेचन करे। इसके द्वारा वह अपना तथा दूसरों का कल्याण कर सकेगा। मूर्खों में सयह गुण नहीं होता, अतः वे **'मज्जन्त्यविचेतसः'** मूढ़, अचेत डूब मरते हैं।

ज्ञानी ही भवसागर से तरते हैं, क्योंकि उन्होंने तारने वालों से सख्य किया है, तरने के साधनों को संभाल रक्खा है। मूर्ख जहाज की पेंदी में छेद कर रहा है, डूबेगा नहीं तो क्या होगा? ❑❑

• वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

बलि प्रथा अभी भी जिन्दा है

–धर्मपाल आर्य

केरल में नरबलि की घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। निर्ममता से की गई हत्या की इस वारदात ने हर किसी को दहला दिया है। इस जघन्य मामले में पुलिस ने तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है, जिन्हें कोर्ट ने १२ दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। पकड़े गए आरोपितों ने दो महिलाओं की बेरहमी से हत्या कर दी। पुलिस ने इस मामले में ६८ वर्षीय भगावल, उसकी ५९ वर्षीय पत्नी लैला और मुख्य आरोपित ५२ वर्षीय मोहम्मद शफी को सीसीटीवी फुटेज की मदद से गिरफ्तार किया है।

पत्रकारों से बातचीत करते हुए कोच्चि पुलिस के कमिश्नर नागार्जुन चाकिलम ने बताया कि मुख्य आरोपित शफी एक हिस्ट्रीशीटर है और इस मामले में जांच टीम को पहला सुराग एक सीसीटीवी फुटेज के रूप में मिला था, जो २६ सितंबर का था। जिसमें पद्मा नाम की एक महिला शफी नाम के एक व्यक्ति के साथ कार में बैठती हुई नजर आ रही है। एनार्कुलम से उसी दिन लापता हुई पद्मा का पता लगाने की जांच में एक अन्य पीड़ित रोसलिन की हत्या का पता चला, जो जून में गायब हो गई थी।

केरल के पठानमथिट्टा के एलंथूर वासियों के चेहरे पर अभी सदमा है। केरल की रक्तरंजित 'मानव बलि' गाथा को लेकर पड़ोसियों को अभी भी विश्वास नहीं हो रहा है कि सामान्य दिखने वाला युगल मानवता के ऊपर ऐसा कलंक भी लगा सकता है। त्रिरुवल्ला का रहने वाला डॉक्टर भगावल काफी समय से आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। उनकी पत्नी लैला ने पेरुंबवूर में रहने वाले तांत्रिक मोहम्मद शफी उर्फ रशीद से फेसबुक के जरिये सम्पर्क किया। उसने कहा– मानव बलि देने से ही भगवान खुश होंगे। उसने दो महिलाओं की बलि देने को कहा। साथ ही यह भी बताया कि वही बलि के लिए महिलाओं का प्रबन्ध भी कर देगा।

इसके बाद मोहम्मद शफी कलाडी और कदवंतरा की रहने वाली दो महिलाओं को पैसों और काम का लालच देकर त्रिरुवल्ला लाया। यहाँ से डॉक्टर दंपती और तांत्रिक दोनों महिलाओं को लेकर पथनामथिटा के एलंथूर गए। यहीं तंत्र साधना करके उनकी बलि दी गई। एलंथूर में ही दोनों महिलाओं को दफना दिया गया। पुलिस बता रही है कि तीनों आरोपियों ने रोसेलिन और पदमा को बांधकर मार डाला, फिर शरीर के छोटे–छोटे टुकड़े किए। शुरुआती जांच में लग रहा है कि आरोपियों ने महिलाओं के शरीर के कुछ हिस्से खाए हैं। पुलिस सूत्रों के अनुसार उन्हें शक है कि दोनों महिलाओं के अलावा अन्य महिलाओं की भी हत्या की गई है। पांच साल में गुम होने वाली २६ महिलाओं की फाइल फिर से खोल दी गयी है।

खबर पढ़कर हमारे पास यह सवाल करने लायक इतने प्रमाण हैं कि क्या अंधविश्वास से प्रेरित हत्याएं कहीं धर्म के नाम पर आपराधिक मनोवृत्ति की विशिष्टता तो नहीं है, जैसे कि अमेरिका में सीरियल किलिंग या मेक्सिको में नशाखोरी की संस्कृति है?

हर तरह की अनुष्ठानिक हत्याएं हमें संबंधित समाज के आंतरिक द्वंद्वों और न्युरोसिस के बारे में कुछ अहम सीख देती हैं। भारत में अंधविश्वास

के तहत हत्याएं इन कारणों से की जाती हैं। वैवाहिक रिश्ते को लेकर चिंताओं, संतान प्राप्ति की चाहत, आर्थिक परेशानियों के कारण और अफसोस कि ये सारे कारण जाने-पहचाने हैं। अश्लीलताएं परोसने वाले की तरह, अंधविश्वास से प्रेरित मनोरोगी दबी पड़ी उन आंतरिक यातनाओं को उभारना चाहता है जिन्हें हम प्रायः गुप्त ही रखना चाहते हैं।

ये सच है कि राष्ट्रीय अपराध रेकॉर्ड ब्यूरो अंधविश्वास से प्रेरित हत्याओं का कोई आंकड़ा नहीं रखता, उनकी गिनती दूसरी हत्याओं में ही करता है, हालांकि पिछले छह महीने में ऐसी हत्याओं की करीब एक दर्जन सनसनीखेज कहानियां सामने आई हैं। आगरा में तांत्रिक हुकुम सिंह ने अपनी तंत्र-शक्ति को बढ़ाने के लिए कथित रूप से दो साल के बच्चे की बलि चढ़ा दी। अमरोहा में, पुलिस के मुताबिक, सरोज देवी ने प्रजनन शक्ति बढ़ाने के तांत्रिक अनुष्ठान के तहत १८ महीने के अपने भतीजे की बलि चढ़ा दी। गुजरात में, कथित रूप से प्रेतग्रस्त एक किशोर को भूखा रखकर मार दिया गया।

अदालतों के आंकड़ों से भी साफ है कि तांत्रिक अनुष्ठानों के तहत हत्या भारतीय अपराध-न्याय जगत की आम बात है। साल १९७३ में, राजस्थान हाईकोर्ट ने पांच साल के बच्चे नरेश पेरीवाल और उसकी चार साल की बहन सरिता की हत्या के लिए तांत्रिक सरदारा राम दकोट को फांसी की सजा सुनाई थी। अदालत के रेकॉर्ड के अनुसार दोनों बच्चों की देवी काली की प्रतिमा के सामने बलि दी गई और उनका खून उस स्थानीय महिला तुलसी राम के पेट पर मला गया, जो बच्चा पैदा करना चाहती थी।

२०१० में सजा पाए एक तांत्रिक कठिरेसन सामियार ने घर बनाने की इच्छा रखने वाले एक परिवार को सलाह दी थी कि वह परिवार 'अगली पूर्णिमा के दिन मानव बलि दे, वह भी छह से दस साल के बीच की उम्र के अपने सबसे बड़े बेटे की।' कमाल देखिये सलाह पर अमल किया गया।

पिछले साल ओडीशा हाइकोर्ट ने गणेश्वर पाताबांधा को दो साल के बच्चे अनिरुद्ध ढल की तांत्रिक बलि देने के आरोप से बरी कर दिया। बच्चे का शव एक कुएं से बरामद किया गया तो पाया गया था कि उसकी जीभ और एक अंगुली काट दी गई थी। लेकिन अदालत का कहना था कि गणेश्वर के खिलाफ एकमात्र सबूत ऐसा था जिसे कानूनन मान्य नहीं किया जा सकता था। गणेश्वर ने गांव की पंचायत के सामने कबूल किया था कि उसने माँ काली के सामने मानव बलि दी थी।'

फोरेंसिक जांचकर्ता यह नहीं सिद्ध कर पाए थे कि गणेश्वर के घर से मानव हड्डियां बरामद की गई थीं वे अनिरुद्ध की थीं, और कोई पोस्ट-मार्टम नहीं किया गया था। उस मामले का निबटारा नहीं हुआ है।

हालांकि तांत्रिकों की हिंसा की खबरें निरंतर मिलती रहती हैं लेकिन उन्हें समुदायों के अंदर ही दबा दिया जाता है। दिल्ली में एक यौन अपराध के मामले के आरोपी तांत्रिक रघुनाथ ने बताया कि उसने एक दंपती को राजी किया था कि वे अपनी कुंवारी लड़की की शादी करना चाहते हैं तो उसे 'यमुना नदी के किनारे श्मशान घाट पर रात के अंधेरे में पूजा करने के लिए भेजें'। राजस्थान में तांत्रिक गणपत लाल से जुड़ा बलात्कार का एक मामला भी इसी तरह संतान की चाहत का था जिसमें और अनुष्ठानों के अलावा एलोवेरा की मालिश भी शामिल थी, जिसकी व्यवस्था गर्भवती न हो पा रही महिला के पति ने की थी।

अकेले केरल में तांत्रिक से जुड़ी हत्याओं का

सिलसिला देखा गया है, इसमें २०१९ की एक घटना भी शामिल है। वहाँ के एक गांव में काला जादू करने वाले कृष्णकुट्टी और उसके परिवार की हत्या उसके एक चेले ने ही कर दी थी। ऐसी हत्याओं के बावजूद जादू-टोने से जुड़े मंदिर राज्य की दूसरी धार्मिक परंपराओं से जुड़ गए हैं और बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहे हैं।

तांत्रिक क्रियाओं से जुड़ी हत्याओं को अंधविश्वास और अशिक्षा से जोड़ना तो आसान लगता है लेकिन ऐसे मामलों से शिक्षित, मध्यवर्गीय परिवारों से जुड़े लोग भी शामिल पाए गए हैं। इसलिए इनका गहरा विश्लेषण करने की जरूरत है।

झारखंड के लातेहार में उस दिन मानिका के सेमरहट गांव में दो लापता बच्चों की लाश मिली। दोनों के सिर कटे हुए थे। मौका-ए-वारदात के मंजर देखकर इलाके के लोग सहम गए। लाशें बालू के ढेर में दबाई गई थीं। पुलिस और फोरेंसिक टीम मौके पर पहुँची और छानबीन की, सुराग जुटाए, हालात देखकर साफ लग रहा था कि ये मामला नर बलि का है। दोनों बच्चे अलग-अलग परिवारों से संबंध रखते थे।

जब पुलिस ने मामला दर्ज कर तफ्तीश शुरू की। जिस जगह लाशें मिली थी, पुलिस को उसी के आस-पास रहने वाले लोगों से पूछताछ कर रही थी, लेकिन कुछ पुख्ता सुराग हाथ नहीं आ रहा था। इसी बीच जांच के दौरान पता चला कि बच्चों की सिर कटी लाशें जहाँ से बरामद हुई हैं, उसके आगे वाला घर सुनील उरांव नाम के एक शख्स का है। पुलिस फौरन उस घर में पहुँची और वहाँ छानबीन की। पुलिस ने पाया कि उस घर की दीवारों पर खून के छीटें जम गए थे। पुलिस को पूरा माजरा समझते देर नहीं लगी। पुलिस ने पाया कि आरोपी फरार है। इसके बाद पुलिस कातिल की तलाश में जुट गई और कुछ दिन बाद सुनील को गिरफ्तार कर लिया गया। जिसने पुलिस को अंधविश्वास से लबरेज अपने गुनाह की कहानी बयां कर दी। इसे सुनकर हर कोई हैरान रह गया।

ऐसी अनेकों घटनायें है जो घट चुकी हैं और अनेकों घटनाएँ अभी भी घट रही हैं क्योंकि जब समाज कर्म से विश्वास उठाकर चमत्कार पर विश्वास करने लगता है तब कोई सभ्य और धार्मिक समाज असभ्य और कातिल बन जाता है। ❑❑

मनुष्य शरीर–एक घोड़ा गाड़ी

कठोपनिषद् में मनुष्य शरीर की तुलना एक घोड़ा गाड़ी से की गई है। मनुष्य के शरीर में दस इन्द्रियाँ–पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ–आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा और पाँच कर्मेन्द्रियाँ–हाथ, पाँव, मुख, मल और मूत्र इन्द्रियाँ रथ को खींचने वाले दस घोड़े हैं। मन लगाम, बुद्धि सारथी (रथवान्) तथा आत्मा रथ का सवार है। आत्मा रूपी सवार तभी अपने लक्ष्य तक पहुँचेगा, जब बुद्धि रूपी सारथी मन रूपी लगाम को अपने वश में रख कर इन्द्रियाँ रूपी घोड़ों को सन्मार्ग पर चलाएगा। घोड़े अगर सारथी के वश में नहीं हैं, तो वे इधर-उधर के आकर्षणों में उलझकर मार्ग को छोड़ बैठेंगे। यही अवस्था इन्द्रियों की है। ऐसी अवस्था का दु:ख रूपी दुष्परिणाम भोगना पड़ता है आत्मा को ।

इस गाड़ी को किराए की गाड़ी बताया गया है जिसे वायु, जल और भोजन के रूप में निरन्तर किराया देना पड़ता है।

मनुष्य शरीर का उद्देश्य सुख प्राप्ति और सुख मिलता है परोपकार आदि शुभ कर्म करने से। परोपकार करना ही सन्मार्ग पर चलना है। असत्य, अन्याय आदि दुष्ट कर्मों में पड़ जाना ही संसार में उलझना है। ❑❑

पुरुष सूक्त में पशुसृष्टिविषयक एक रहस्यात्मक अंश

–उत्तरा नेरूर्कर, बंगलौर (मो०–९८४५०५८३१०)

यजुर्वेद का इकत्तिसवां अध्याय 'पुरुष सूक्त' के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि उसमें परमात्मा को अनेकत्र उसे 'पुरुष' नाम से बुलाया गया है। वस्तुतः, इस अध्याय में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वर्णन है। यह वैसा नहीं है जैसा कि नासदीय सूक्त नामक ऋग्वेद के दशम मण्डल के १२९वें सूक्त में पाया जाता है, अर्थात् विशेषकर प्रकृति के परिणामों के क्रम की बात नहीं करता, परन्तु अन्य प्रकार की रचनाओं को भी कहता है, जैसे वेदों का उद्भव। उसी के अन्तर्गत, यह अध्याय प्राणि–सृष्टि का भी वर्णन करता है। यह वर्णन बहुत ही वैज्ञानिक है। यहाँ तक कि इसमें एक विशेष तत्त्व निहित है, जो कि, मुझे विश्वास है, बहुत कम को ज्ञात होगा। इस लेख में मैंने इन पशु–सृष्टि के अंशों के साथ–साथ, इस विशेष अंश को विस्तार से निरूपित किया है।

पुरुष सूक्त में सृष्टि का वर्णन पूर्णतया क्रम से नहीं है, तथापि विहंगम दृष्टि से है भी। पशुओं की सृष्टि के विषय में पहला मन्त्र है–

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानाराण्या ग्राम्याश्च ये ॥ यजुर्वेदः ३१।६।।

अर्थात् उस यज्ञस्वरूप, सब के द्वारा पुकारा जाने वाला परमेश्वर दही, घी, आदि को भली प्रकार भरता है (पशुओं में इतना दूध उत्पन्न कर देता है कि मनुष्य भी उसमें से कुछ भाग ग्रहण कर सकें)। उसने पशुओं को बनाया जो वायु में विचरण करने वाला, अथवा पृथिवी पर विचरण करने वाले आरण्य और ग्राम्य पशु होते हैं।

यहाँ यह न समझना चाहिए कि मनुष्यों की बस्ती में उत्पन्न होने से ही पशु ग्राम्य=पालतू हो जाता है। पहले ये पशु वन में ही पाए गए, परन्तु उनमें पालतू बनने का स्वभाव था और उनसे मनुष्य अपना कुछ कार्य भी साध सकता था, इसलिए उसने उनको ग्राम्य बनाया। कुछ पशु, जैसे कौए, ग्रामों में पाए जाने पर भी पाले नहीं जा सकते। तथापि वेद शिक्षा दे रहा है कि कुछ पशुओं को पाला जा सकता है, सो ऐसा करो, और उनके दूध आदि से दही आदि बना कर स्वास्थ्य लाभ करो। इससे 'सम्भृतं पृषदाज्यं' पदों का सन्दर्भ भी स्पष्ट हो जाता है।

वन्य पशुओं का भी अपना महत्त्व है। वे वनों को स्वस्थ रखते हैं, और वन के बिना मनुष्य जीवन सम्भव नहीं है। इसलिए वेदों ने वनों के संरक्षण का भी संकेत दिया है।

तीसरा विभाग वेद वायव्य प्राणियों का बता रहा है। सम्भवतः, इन्हें अलग इसलिए गिना गया है कि यद्यपि ये मनुष्यों की बस्ती में पाए जाते हैं तथापि प्रायः पालतू बनाकर इनसे कोई मानवीय उद्देश्य नहीं पूर्ण किया जा सकता है। कुछ लोग पक्षियों को पिंजरे में अवश्य रखते हैं, परन्तु उनसे मन बहलाने के सिवा, उनका कोई अन्य उपयोग नहीं होता। वे पक्षी भी पिंजरे से छूटते ही दूर उड़ जाते हैं। उन्हें मनुष्यों का बन्धन रास नहीं आता है गाय, भेड़, बकरी, आदि के साथ, यहाँ तक कि कुत्ते–बिल्ली आदि के साथ भी, ऐसा नहीं होता। इस प्रकार यह मन्त्र पशुओं की परमात्मा द्वारा उत्पत्ति, उनके तीन प्रकार व उनसे प्राप्त उत्पादों का प्रयोग समझा रहा है।

जैसे ग्राम्य पशुओं में प्रमुख कौन-कौन से हैं, इसको बताते हुए आगे का मन्त्र कहता है–

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः ॥ यजुर्वेदः ३१।८।।

अर्थात् उस (उपर्युक्त यज्ञस्वरूप परमेश्वर) से अश्व उत्पन्न हुए, और जिन-जिन के दोनों ओर दांत होते हैं, वे। निश्चय से, गाएं उससे उत्पन्न हुईं और भेड़-बकरियां भी।

जबकि घोड़ा, गाय, भेड़ व बकरी, सरलता से समझ में आते हैं, यहाँ एक विचित्र पद आता है–उभयादतः–वे जानवर जिनके दोनों जबड़ों पर दांत होते है।। इस पद का महत्त्व वैज्ञानिकों ने आज ढूंढ निकाला है, और इसी को मैं आगे दर्शाऊंगी ।

इससे पहले कि हम उस खोज को देखें, यह जानना आवश्यक है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गायों को जो एक ओर दांत वाले पशुओं का उपलक्षण माना है। जबकि गायों के सामने के दांत केवल नीचे की ओर होते हैं, उनके पीछे के दांत ऊपर और नीचे– दोनों ओर होते हैं। इसलिए, गाएं भी उभयादत हैं। इस प्रकार इस मन्त्र में केवल उभयादत ग्राम्य पशुओं के उदाहरण हैं।

जिन्होंने थोड़ा भी जीवविज्ञान पढ़ा है, वे जानेंगे कि उपर्युक्त पशु स्तनपायी विभाग (mammals) के हैं। इस विभाग के अन्तर्गत सभी वे योनियां आती हैं जिनमें माता नवजात शिशु को स्तनपान कराती है। सो, कुत्ते, बिल्ली, हिरण, हाथी, आदि सभी इस श्रेणी में आते हैं। यह विभाग पशुओं का सबसे उत्कृष्ट विभाग है और मानव योनि इसकी चोटी पर विद्यमान है।

अब देखते हैं 'उभयादतः' पद की विशेषता–क्यों वेदों ने स्तनपान आदि अन्य धर्मों की चर्चा न करके, इस धर्म को अधिक महत्त्व दिया है। अप्रैल २००३ में मैंने नेशनल जियोग्रैफिक की एक पत्रिका मे जब इसका विवरण पाया तो मैं उछल पड़ी। अन्यथा मुझे यह पद इस मन्त्र में बहुत अटपटा लग रहा था। भाष्यों में भी इसका कोई महत्त्व दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। इस पत्रिका के कुछ सम्बद्ध उद्धरण मैं नीचे दे रही हूँ। अनन्तर हम उन पर चर्चा करेंगे।

"The earliest known mammals were the morganucodontids, tiny shrew like creatures thst lived in the shadows of the dinosaurs 210 million years ago. They were one of several different mammals lineages that emerged around that time. All living mammals today, including us, descend from the one line that survived" —

अर्थात् सबसे पहले ज्ञात स्तनपायी मॉर्गनुकोडोन्टिड्स थे, जो २१ करोड़ वर्ष पहले डायनासौर की छाया में रहने वाले छोटे-छोटे कर्कशा अथवा चूहे जैसे जीव थे। वे उस समय के आसपास विकसित हुए, कई अलग-अलग स्तनपायी वंशों में से एक थे। आज पाए जाने वाले सभी स्तनधारी, हमारे सहित, उन वंशों में से एक वही शृंखला है जो शेष रही।

"We have specialized jaws, whose hinges come together early in our evolution to create the ear bones that let us hear better than other animals. We have complex teeth that let us grind and chew our food so thst we get more nutrition out of it"—

हमारे पास विशेष जबड़े हैं, हमारे विकास के प्रारम्भ में ही जिनके कब्जे/जोड़ एक साथ जुड़कर कान की हड्डियों को बनाते हैं जिससे हमें अन्य जानवरों की तुलना में बेहतर सुनाई देता है। हमारे दांत की संरचना जटिल है,जिससे हम अपने भोजन की पीस और चबा सकते हैं। इस प्रक्रिया से

हमें भोजन से अधिक पोषण मिल पाता है।

इस प्रकरण में आगे बताया गया है कि सरीसृप आदि के दांत अलग–अलग होते हैं, उनके जबड़े में एक हड्डी नहीं होती, परन्तु अलग–अलग हड्डियाँ होती हैं, और उनके दांतों का प्रयोग केवल शिकार को पकड़ने के लिए होता है, चबाने के लिए नहीं यदि एक सांप की सोचें, तो उसका मुंह इसीलिए इतना बड़ा चौड़ जाता है कि उसमें हिरण भी समा जाता है। यह इसी प्रकार सम्भव हो पाता है कि उसके जबड़े की हड्डियाँ अलग हैं। वह पूरा हिरण एक बार में सटक लेता है, फिर उसके उदर की माँसपेशियां अन्दर ही अन्दर हिरण की हड्डियाँ आदि तोड़ती हैं, और उसके बाद पाचन तन्त्र को भी बहुत काम करना पड़ता है। इसी प्रकार, यदि एक मछली को देखें, तो उसके मुंह के दोनों ओर दांत होते तो हैं, पर वे भोजन को चबाने के काम के नहीं होते। वे नुकीले होते हैं और एक–दूसरे के बीच में पटते हैं, एक के ऊपर एक नहीं। उनका काम होता है केवल भोजन को पकड़ना। फिर जिह्वा आदि के द्वारा भोजन पूरा का पूरा गटक लिया जाता है।

"Mammals were starting to come into their own around the time of the morganucodontids. Their tiney jaw bones — about an inch long – show just how different the mammalian form was from the giant reptile world."—

मॉर्गनुकोडोन्टिड्स के समय के आसपास स्तनधारी भली प्रकार विकसित होने लगे थे। उनके छोटे जबड़े की हड्डियाँ–लगभग एक इंच लम्बी–दिखाती हैं कि विशाल सरीसृप दुनिया से स्तनधारी का रूप कितना अलग था (इस भेद का विवरण मैंने ऊपर कर ही दिया है।)।

"The separation of the jaw and the ear bones allowed the skulls of later mammals to expand sideways and bacward–enabling mammals to develop bigger brains. The teeth of the morganucodontids were another important innovation that later mammals would improve upon. The upper and lower morals of morganucodontids jawbones interlocked, letting them slice their food in pieces. That released more calories and nutrients."

जबड़े और कान की हड्डियों के अलग होने से अनन्तरकाल के स्तनधारियों की खोपड़ी की हड्डियाँ पार्श्व में और पीछे की ओर फैल गईं – जिससे स्तनधारियों का मस्तिष्क (अन्य पशुओं की अपेक्षा) बढ़ सका। मॉर्गनुकोडोन्टिड्स के दांत एक और महत्वपूर्ण आविष्कार थे, जो बाद के स्तनधारियों में और अधिक विकसित हुए। मॉर्गनुकोडोन्टिड के जबड़े के ऊपरी और निचले दांत एक–के ऊपर–एक बैठते हैं, जिससे वे अपने भोजन को टुकड़ों में काट सकते हैं। इसने (पशु को) अधिक ऊर्जा और पोषक तत्त्व प्राप्त कराए ।

भोजने को चबा पाने से, भोजन के रस–ग्रहण का आधा काम तो मुंह में ही हो जाता है, शेष आंते कर लेती हैं। इस प्रकार भोजन के लगभग सारे पोषक तत्त्व शरीर खींच लेता है और केवल व्यर्थ तत्त्व ही मल रूप में बाहर निकलते हैं।

अब इन कथनों को प्रारम्भ से पुनः देखते हैं। इसमें पहले तो यह नाम 'मॉर्गनुकोडोन्टिड्'। इसमें 'मॉर्गनु' तो किसी पुराने पाश्चात्य देवता 'ग्लामॉर्गन' के नाम पर रखा गया प्रतीत होता है। सम्भवतः उसके दांत कुछ विशेष थे। दूसरा भाग 'कोडोन्टिड्', इसके अर्थ है। एक–के–ऊपर–एक स्थित दांत। यह तो 'उभयादतः' का ही अनुवाद हो गया। और वैज्ञानिकों ने प्रथम स्तनपायियों का नाम उनके दांतों के

ऊपर रखा, स्तनपान पर नहीं, यह भी कितने आश्चर्य की बात है। यह इसीलिए किया गया कि यह अविष्कार इतना निराला था कि इस अकेले ने स्तनपायियों के समुदाय को प्राणियों की चोटी पर लाकर बैठाल दिया। यहाँ तो जैसे वेद के शब्द का महत्त्व वैज्ञानिकों ने पूर्णतया खोल कर रख दिया।

दांतों की ऐसी संरचना इतनी महत्त्वपूर्ण थी कि जो स्तनपायियों की अन्य शृंखलाएं थीं, वे तो लुप्त हो गईं, बस यही शृंखला शेष रही। इसके कारण भी लेख स्पष्ट करता है—मॉर्गनुकोडोन्टिड्स और अन्य शृंखलाएं डायनासौर के समय ही उत्पन्न हो गई थीं। जिन कारणों से डायनासौर नष्ट हुए, वे कारण सभी प्राणियों को त्रस्त कर रहे थे। तो जो प्राणी ऐसे में विभिन्न प्रकार के खाद्यान्न खा सकता था, वही बच सकता था। सो, मॉर्गनुकोडोन्टिड्स के विपरीत स्थित दांत इस दिशा में उनकी शक्ति बन गए और आने वाले समय में, उनकी शृंखला का बहुत अधिक विकास हो पाया, जिससे कि अन्ततः मानव भी विकसित हुए।

जबड़े के इस विशेष प्रकार के इतने लाभ होना—श्रवण-शक्ति में वृद्धि, मस्तिष्क में वृद्धि, आदि—होना तो मेरी कल्पना के भी परे था। यह लेख पढ़कर ही मुझे वेद के शब्द के संकेत का पूरा महत्त्व समझ में आया।

वेद के एक शब्द में हमने इतनी गहराई पाई है कि ज्ञान से हमारी आँखें चौंधिया गईं। यदि हम उस अटपटे शब्द को अटपटा समझ कर ही छोड़ देते, तो ज्ञान के एक पूरे विभाग से वंचित रह जाते। फिर, यह सोचकर कि वेद के प्रत्येक शब्द में न जाने इस प्रकार कितना अर्थ छिपा हुआ है, हमारी बुद्धि ही चकराने लग जाती है। इसीलिए, आधुनिक वैज्ञानिकों को और अधिक वेदाध्ययन से जुड़ना चाहिए, केवल वैयाकरणों, नैरुक्तों, वेदांग शास्त्रज्ञों (यद्यपि ये भी वैज्ञानिक ही हैं) के द्वारा ही वेदमन्त्रों के सम्पूर्ण अर्थ नहीं उभारे जा सकते, यह मेरी दृढ़ मान्यता है। ❑❑

मृत्यु का अद्‌भुत दृश्य

स्वामी जी का अन्त समय आया और अजमेर में अनेक सज्जन उनके अन्तिम दर्शन करने पहुँचे। उनमें लाहौर के प्रसिद्ध विद्वान् पं गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए० भी थे। गुरुदत्त को ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं था, परन्तु परन्तु स्वामी जी के लिए बड़ी श्रद्धा थी। स्वामी जी ने सबसे बातचीत करके रुखसत कर दिया। अब वे जिस शय्या पर थे। उस पर बैठ गए। उन्होंने कुछ प्राणायाम किया। प्राणायाम के बाद कुछ वेद मन्त्रों का उच्च स्वर से उच्चारण किया। मन्त्रोच्चारण करते-करते उनके मुख पर मुस्कुराहट आई। गुरुदत्त सोचने लगे कि मौत का नाम सुनकर लोग कांप जाया करते हैं। परन्तु इस मृत्यु का स्वामी दयानन्द पर प्रभाव नहीं, वे दुःखी होने की जगह मुस्कुरा रहे हैं। स्वामी दयानन्द की यह मुस्कुराहट एक विद्युत थी, जिसने गुरुदत्त के हृदय में जाकर वहाँ नास्तिकता का जो कूड़ा करकट जमा था उसे भस्म करके गुरुदत्त को उच्चकोटि का आस्तिक बना दिया। स्वामी दयानन्द मुस्कुराते हुए बोले, 'प्रभो आपने अच्छी लीला की, आपकी इच्छापूर्ण हो।' इन शब्दों के सथ ही उन्होंने अन्तिम श्वांस खींचा और दुनिया से रुखसत हो गए। मृत्यु के इस अद्‌भुत दृश्य ने प्रकट कर दिया कि जो महान् पुरुष ईश्वर विश्वासी होते हैं, जिनके हृदय में परोपकार के भाव भरे होते हैं और जिनका संसार में किसी से ईर्ष्या, द्वेष नहीं होता, वे इस प्रकार प्रसन्न वदन, मुस्कुराते और ईश्वर को स्मरण करते हुए ही संसार से कूच किया करते हैं। ❑❑

अब इंसाफ कहाँ मिलेगा ?

–राजीव चौधरी (मो०–९५४००२९०४४)

न्याय की आस में वर्षो न्याय के मंदिर सुप्रीम कोर्ट के फैसले से उत्तराखंड की बेटी के परिजनों के पैरों तले से जमीन खिसक गई। लड़की के माता–पिता जार–जार रो रहे हैं। कह रहे हैं कि ग्यारह साल तक कानूनी लड़ाई लड़ने के बाद हमने न्याय पालिका पर से भरोसा खो दिया। लड़की के पिता ने तो यहाँ तक कहा कि जो अपराधियों के साथ होना था, वह हमारे साथ हो गया। माँ ने कहा– वे अपराधी तो हमें कोर्ट में भी मार डालने, काट डालने की धमकी जब–तब दिया करते थे, लेकिन हम सोचते थे कि न्याय एक दिन हमारे साथ भी होगा, पर नहीं हो सका। उनको यकीन नहीं हो पा रहा है कि जिन तीन आरोपियों ने उनकी बेटी के साथ हैवानियत की सारी हदें पर करते हुए उसकी हत्या कर दी थी, उन दरिंदों को देश की सर्वोच्च अदालत ने बरी कर दिया है। गौरतलब है कि देश की राजधानी दिल्ली के नजफगढ़ इलाके में १० साल पहले ०९ फरवरी २०१२ को तीन युवकों द्वारा लड़की का अपहरण कर उसके साथ गैंगरेप और बाद में उसकी हत्या कर हरियाणा के खेतों में फेंक देने का मामला सामने आया था।

पूरा मामला कुछ यूँ था। ९ फरवरी २०१२ की शाम थी। सूरज डूब चुका था, धुंधली रोशनी ढह कर अँधेरे में तब्दील हो चुकी थी। रोजाना की तरह गुडगाँव की एक कम्पनी में काम करने वाली लड़की बस से उतरकर अपनी दो सहेलियों के साथ रात करीब पौने नौ बजे छावला स्थित हनुमान चौक से घर की तरफ जा रही थी। बीस मिनट का ये पैदल रास्ता उसे जल्दी तय करना होता था। घर पहुँचते ही वो माँ से कहती थी, माँ मैं आ गई। छोटे भाई बहन उससे दीदी–दीदी कहकर लिपट जाते थे।

उस दिन उसे नौकरी की पहली सेलरी भी मिली थी। खुशी–खुशी वह तेज क़दमों से घर की ओर बढ़ रही थी। तभी रास्ते में एक लाल रंग की इंडिका कार आई जिससे दो युवक बाहर निकले और उन्होंने लड़की को जबरन कार में खींच लिया पहचान छिपाने के लिए युवकों ने अपने मुंह को कपड़े से ढका हुआ था। लड़की के अपहरण के बाद कार नजफगढ़ क्षेत्र स्थित ताजपुर गांव की ओर चली गई उस दिन उसे नौकरी की पहली सेलरी भी मिली थी। लड़की को उठाने के बाद बदमाश उसे कार में लेकर अंदरुनी रास्तों से होते हुए दिल्ली से हरियाणा जा पहुँचे।

वारदात के चौथे दिन १३ फरवरी को पीड़िता की लाश हरियाणा के रेवाड़ी क्षेत्र स्थित रोढ़ाई गांव के पास रेल की पटरियों के पास से बरामद की गई थी। इस घटना के बाद उत्तराखंड के लोग सड़कों पर इंसाफ माँगने निकले। पुलिस ने जांच के बाद रवि, उसके भाई राहुल और अन्य युवक विनोद को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार, रवि लड़की को पसंद करता था। रवि के प्रेम प्रस्ताव को जब लड़की ने ठुकरा दिया तो इस वारदात को रवि ने भाई व दोस्त के साथ मिलकर अंजाम दिया था। लेकिन अंजाम कैसे दिया ये किस्सा सुनकर किसी भी इन्सान की रूह काँप जाये।

दैनिक भास्कर में दो साल पहले छपी एक रिपोर्ट बताती है कि लड़की का अपहरण कर दरिंदो ने रास्ते में एक ठेके से शराब की बोतल

खरीदी और शराब पीते हुए लड़की के साथ बदसलूकी करने लगे। इसी जगह पहले तो आरोपियों ने उसके कपड़े फाड़े और फिर एक-एक कर उसका रेप किया, उन्होंने न सिर्फ उसके साथ रेप बल्कि उसे कई जगहों से काटा और जलाया भी। लड़की अपने जान की गुहार लगाती रही, लेकिन आरोपियों ने उसकी एक न सुनी। उनपर हवस का ऐसा भूत सवार था कि वो कुछ भी सुनने-समझने को तैयार नहीं थे। निढाल हो चुकी पीड़िता ने आरोपियों से पीने के लिए एक घूंट पानी माँगा, लेकिन तब तक उनके दिमाग में उसे मारने और अपनी करतूत छुपाने की तरकीब बन चुकी थी।

वो दर्द से कराह रही थी, रो रही थी इसके बाद आरोपियों ने उसे जिस घड़े से पानी पिलाया था सबसे पहले वही घड़ा उठा कर उसके सिर पर दे मारा। इसके बाद तीनों ने लड़की के साथ जो कुछ किया, उसे सुनते ही किसी को भी उसकी दर्द की शिद्दत का अहसास होने लगेगा। उसका जिस्म खून से तर-बतर था। इसके बाद दरिंदों ने गाड़ी को स्टार्ट किया साइलेंसर से दूसरे औजारों को गर्म कर उसके शरीर को हर जगह से जला दिया। इतना ही नहीं आरोपियों ने पीड़िता के प्राइवेट पार्ट को भी जला दिया। फिर आरोपियों ने बीयर की बोतल तोड़कर उसके शरीर को काट दिया और फिर उसकी आँखें फोड़कर उसमें एसिड डाल दिया।

पुलिस चार्जशीट बताती है कि इस मामले में आरोपियों ने खुद कबूल किया था कि उन्होंने तसल्ली करने के लिए पीड़िता पर कई वार किए और फिर जब उन्होंने सुनिश्चित कर लिया कि उसकी मौत हो गई तो वो उसे वहीं छोड़कर भाग गए।

ये १६ दिसम्बर २०१२ निर्भया रेप केस से १० महीने पहली की घटना है। लेकिन इस मौत पर आक्रोश नहीं फूटा था और ना वो मीडिया की सुर्खियां बनीं थी। उसके चले जाने के बाद न्यूज रूम बहसें नहीं हुई थीं, कानून नहीं बदले गए थे। कोई नेता उसके घर नहीं गया था। उसके पिता जब बेटी के लिए इंसाफ माँगने तत्कालीन दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के पास गए थे तो ये कहकर टरका दिया गया था कि ऐसी घटनाएं तो होती ही रहती हैं।

खैर पुलिस जाँच-पड़ताल के बाद तीनों आरोपी पकड़े गये। उन्होंने अपना जुर्म भी स्वीकार कर लिया। अब बात न्याय इंसाफ की होने लगी अपनी बेटी को इंसाफ दिलाने के लिए कुंवर नेगी जंतर-मंतर पर लंबा धरना देने बैठ गये लेकिन कोई भी नेता उनसे मिलने नहीं पहुँचा।

बहराल दिल्ली की द्वारका कोर्ट ने मामले की वीभत्सता को देखते हुए साल २०१२ में दरिदों को फांसी की सजा सुना दी थी। लेकिन मामला दिल्ली हाईकोर्ट में जा पहुँचा। दो साल चली बहस और दलीलों के पश्चात दिल्ली हाईकोर्ट ने भी फरवरी को २०१४ किरण के साथ हुए गैंगरेप के मामले के तीनों दोषियों रवि, राहुल और विनोद को फांसी की सजा को बरकरार रखा।

तब आरोपी मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट पहुँच गये। एक तो गरीबी ऊपर से कानूनी जंग बूढ़े माता-पिता न्याय की आस में करीब ६ साल सुप्रीम कोर्ट में लड़ाई लड़ते रहे। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले पर ६ अप्रैल को फैसला सुरक्षित रखा था। सरकार की ओर से एडिशनल सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने फांसी की सजा की पुष्टि की माँग की थी। लेकिन दरिदों के पक्ष की ओर से कोर्ट में दलील दी गई कि दोषियों में से एक जिसका नाम विनोद है वह बौद्धिक अक्षमता से पीड़ित है। यानि पागल है, उसके सोचने विचारने की शक्ति ठीक नहीं है! दोषियों की तरफ से पेश वकील ने इनके खिलाफ सहानुभूति भरा रवैया

(शेष पृष्ठ २६ पर)

शांति की खोज

–प्रस्तुति : रचना शास्त्री (मो०–९३०६७०१४५७)

संसार का हर प्राणी सुख, शान्ति और प्रसन्नता चाहता है। इसे पाने के लिए नाना प्रकार के कर्म संग्रह करता है। किन्तु आज के भोगवादी और भौतिकवादी मानव-समाज की सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि जितना वह सुख शान्ति प्रसन्नता व आनन्द को पाने का प्रयास करता है उतना ही उन भावों से दूर होता जाता है। इसी कारण आज संसारी मानव किसी ऐसी वस्तु की तलाश में भटक रहा है, जो उसे चिन्ता तनाव द्वंद्व, पीड़ा, अशान्ति, भय रोग आदि से मुक्त करा सके। शान्ति प्रेम, सहयोग और अपनत्व का रास्ता दिखा सके। इस खालीपन को कोई धन से कोई शराब से कोई फिल्मों से सैर-सपाटे से और कोई खाने पीने से भरने में लगा हुआ है। जब तक मन और इन्द्रियां विषयों में लीन है, तब तक तो दुःख भूला रहता है। परन्तु विषयों के अलग होते ही फिर वही खालीपन कचोटने लगता है।

यही छल क्रम न जाने कब से चल रहा है। यदि अशान्ति, चिन्ता, तनाव, असन्तोष आदि का विवेचन किया जावे तो स्पष्ट है कि आज का मानव मूल ध्येय एवम् मनुष्यता को भूलता जा रहा है, उसी के बदले यह उक्त रोग भोगने पर विवश है। और आगे आने वाले समय में यह रोग और अधिक बढ़ेंगे, ये घटेंगे नहीं।

क्योंकि मनुष्य जितना मूल से हटेगा और कटेगा उतना ही अशान्त, बैचैन और बे-सब्र होता जाएगा।

आज मानव के दुःखों व परेशानी का एक कारण यह भी है वह वास्तविक जरूरत और आकांक्षाओं में अंतर नहीं कर पा रहा है, इससे भटकाव और अधिक बढ़ गया है।

आज का भौतिकवादी विज्ञान मनुष्य के मन के साथ बड़े खतरनाक खेल- खेल रहा है। मन के लिये नित नये सामान बनाये और दिखाये जा रहे हैं। जो कुछ फिल्मों, रेडियो, टी०वी०, विज्ञापन आदि से मानव समाज को दिखाया, सुनाया व पढ़ाया जा रहा है, वह मनुष्य के अन्दर सोई हुई अतृप्त वासनाओं, कामनाओं, व दबी हुई कुंठाओं को जगा रहा है, इसलिए ये अन्य भोग-विलासों से सन्तुष्ट नहीं कर पाते हैं।

जब तक मन असन्तुष्ट है वासनाओं से भरा हुआ है, तब तक मानसिक शान्ति की अनुभूति नहीं हो सकेगी। मन को ठीक करने के लिए मन की जड़ों तक जाना होगा। मन का आधार भोजन और विचार हैं। यदि शुद्ध, सात्त्विक, व अहिंसक होगा तो विचार भी वैसे ही बनेंगे। मन विचारों से ही बनता और बिगड़ता है।

अन्त में सारांश यह है कि दुनिया सद्विचारों के अभाव में ही श्रेष्ठ और सुन्दर जीवन को नरक बनाकर जी रही है। जरूरत है अच्छे विचारों से मन को कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर लाने की, तभी मन शान्ति का पात्र बन सकता है।

।। ओ३म् स्वस्ति ।।

- **गौ आदि पशुओं की रक्षा सभी प्राणियों के सुख के लिये आवश्यक है।**
- **गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है।**

एक देश दो विधान आखिर क्यों ?

–हेमराज शास्त्री (मो०–८१६८९७५०५०)

भले ही २६ जून १९५२ को लोकसभा में डॉ० मुखर्जी ने कहा था कि एक देश में दो विधान, दो प्रधान, दो निशान नहीं चलेंगे। लेकिन ७० साल बाद भी स्थिति जस की तस है और धर्मनिरपेक्षता के दम पर विधान की खुलकर धज्जियां उड़ाई जा रही है। पिछले दिनों एक बार फिर तेलंगाना के आदिलाबाद में एक परीक्षा केंद्र पर, हिंदू महिलाओं को चूड़ियों, झुमके, पायल, पैर के अंगूठे के छल्ले, मंगलसूत्र सहित अपने सभी सामानों को हटाने के लिए कहा गया था। जबकि मुस्लिम समाज की लड़कियों के बुर्का पहनने पर कोई आपत्ति नहीं थी। तब यह सियासत गर्मा गयी और एक बार फिर सवाल उठा कि एक देश में दो विधान क्यों हैं? छात्रों में धार्मिक रूप से भेदभाव क्यों किया जाता है?

हालाँकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ। जब-जब कोई परीक्षा आती है तब-तब सुरक्षा के नाम पर ऐसा होता है। पिछले दिनों हरियाणा में दो छात्रों को जनेऊ उतारने को कहा गया था। जिसमें आर्य समाजी परिवार के युवा अड़ गये। यहाँ तक कहा कि गर्दन उतर सकती है लेकिन जनेऊ नहीं ! अंत में परीक्षा केंद्र पर स्थित अधिकारियों ने उन्हें जनेऊ के साथ ही अन्दर जाने दिया।

परन्तु सवाल तो तब भी यही था कि आखिर जनेऊ से नकल करने का खतरा है लेकिन बुर्के से कोई नकल का खतरा नहीं? जबकि आज तक कोई ऐसा मामला सामने नहीं आया कि जनेऊ मंगलसूत्र चूड़ी या बिंदी की आड़ में कोई छात्र नकल करता पकड़ा गया हो? जबकि बुर्के की आड़ में अनेकों ऐसे मामले दर्ज हो चुके हैं, जिनमें मुस्लिम लड़कियाँ बुरका पहनकर नकल करती पकड़ी गयी हैं? पिछले दिनों मुजफ्फरनगर के ही एक परीक्षा केंद्र पर कई मुस्लिम छात्राएं बुर्के की आड़ में नकल करती पकड़ी गयी थीं। दूसरा अभी कुछ दिन पहले ही बिहार के मुजफ्फरपुर में एक परीक्षा केंद्र पर शिक्षक को शक हुआ कि बुर्के के अन्दर ब्लूटूथ हो सकती है। शिक्षक ने हिजाब हटाकर कान दिखाने को कहा, तब छात्राओं ने ऐसा ना करके परीक्षाकेंद्र से बाहर जाकर अपने घरों में फोन करके भीड़ जोड़ ली। जरा सी बात को मजहब की आड़ में एक बड़ा झाड़ बना दिया। फिर वही घिसे-पिटे कथन दोहराए गये कि हमें पाकिस्तान जाने को कहा। हमें देशद्रोही कहा। ये कहा वो कहा। यानि वही सहानुभूति का गेम जो १९४७ में खेल-खेल कर अलग पाकिस्तान लिया था।

इस विवाद पर भी सोशल मीडिया पर लोगों ने वही प्रतिक्रिया दी कि बुर्का जेहाद का हिस्सा है, इसलिए दिक्कत नहीं। लेकिन चूड़ी पायल मंगलसूत्र शृंगार का हिस्सा है इसलिए परीक्षा में प्रवेश नहीं, इस देश में कौन से षड़यंत्र हो रहे हैं? जिस देश के स्कूलों व परीक्षास्थलों में मुस्लिम खातूनों को बुर्का पहनने की छूट है, ईसाइयों को क्रॉस पहने हुए परीक्षा देने की छूट है, लेकिन किसी सनातनी बहन को मंगलसूत्र पहनने की इजाजत नहीं, इसी दोहरे चरित्र वाले देश को ही सेक्युलर राष्ट्र कहा जाता है?

दरअसल ऐसा एक दो बार नहीं बल्कि कई बार हो चुका है। किन्तु जब सुनने को बहुत कुछ हो तो कुछ ना कुछ अनसुना हो ही जाता है।

पिछले दिनों राजस्थान में रीट एग्जाम परीक्षार्थियों के परीक्षा केंद्र में प्रवेश को लेकर प्रशासन ने इतनी सख्ती दिखाई कि महिलाओं और युवतियों के दुपट्टे उतरवा दिए गए और कपड़ों पर लगे बटन तक काट दिए गये थे। यहीं नहीं महिलाओं के मंगलसूत्र, चूड़ियां, बालों की क्लिप, साड़ी पिन निकलवा दी गई थी। और तो और कैंची से परीक्षा केंद्रों पर लंबी बाहों के कुर्ते काटे गए। इसका शिकार सिर्फ हिंदू छात्र-छात्राएं ही हो रहे थे। जबकि हिजाब पर न कोई रोक थी न कोई टोक, जरा सोचिए कि यहाँ मंगलसूत्र और दुपट्टा खल रहा है लेकिन हिजाब धड़ल्ले से चल रहा है?

अब कहा जाता है कि हिजाब इनके मजहब का अटूट हिस्सा है, ठीक है मान लिया! लेकिन सवाल ये है कि मंगलसूत्र, चूड़ी बिंदी जनेऊ पायल ये भी सनातन धर्म से जुड़े हैं। अगर ये हटाये जा सकते हैं तो हिजाब क्यों नहीं? परन्तु जवाब के बजाय एक दूसरी खबर मिली कि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अपने ही दिए आदेश को वापस लेने पर विचार कर रही है, जिसमें मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं के दौरान भाग लेने वाली छात्राओं को बुरका व हिजाब पहनने पर पाबंदी लगा दी गई थी।

इससे हो सकता है कि जब कहने को बहुत कुछ हो तो लोग ऐसी खबरों पर चुप हो जाते हैं। पिछले दिनों कर्नाटक में परीक्षा के दौरान हिजाब ना पहने देने से कुछ छात्राओं ने फिर से परीक्षा कराने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुँचा था। तब चीफ जस्टिस ने कहा था कि इस मामले का परीक्षा से कोई संबंध नहीं है, इस मामले पर तुरंत सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट ने ये कहते हुए मना कर दिया था कि परीक्षा में गैरहाजिर रहना अहम फैक्टर है कारण नहीं, चाहे वो हिजाब विवाद, तबीयत खराब, उपस्थित रहने में असमर्थता हो या परीक्षा के लिए पूरी तैयारी नहीं होने की वजह से हो। चीफ जस्टिस ने कहा था अंतिम परीक्षा में गैरहाजिर रहने का मतलब है एबसेंट रहना और दोबारा परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी।

आखिर क्या जिद है कि परीक्षा बिना हिजाब के नहीं दी जाएगी? जब बिना हिजाब के मुस्लिम लड़कियाँ फिल्मों में डांस कर सकती है। टी०व०ी सीरियल में अर्धनग्न हो सकती हैं, बिना हिजाब के खेल सकती हैं तो परीक्षा क्यों नहीं? ये सारी शर्म हया लज्जा मजहब की ठेकेदारी मजहब का अभिन्न अंग, परीक्षा के दौरान ही क्यों लेकर खड़े हो जाते हैं? कहीं ये नकल करने का साधन तो नहीं बना गया?

सवाल और भी हो सकते हैं जवाब और भी हो सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर छात्रों में भेदभाव क्यों किया जा रहा है और क्यों हिदुओं से ही उनके धार्मिक चिन्हों से लेकर सुहागिन की निशानी मंगलसूत्र तक उतरवाए जा रहे हैं? क्यों उनकी चूड़ियाँ तोड़ी जा रही हैं? उस सुहागिन को क्यों विधवा महसूस कराया जा रहा है? आखिर परीक्षा केन्द्रों पर हिन्दू ही क्यों जलील किये जा रहे हैं? एक देश में दो विधान क्यों हैं और इस बात का जवाब कौन देगा कि परीक्षा पढ़ाई की है या जिहादी लड़ाई की? ❑❑

नीति श्लोक

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते संघर्षणच्छेदनतापताडनैः ।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते, त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥ —चाणक्यनीति

अर्थ—जैसे घिसने, काटने, तपाने और पीटने—इन चार प्रकार से सोने की परीक्षा की जाती है, वैसे ही दान, शील, गुण और आचरण इन चारों प्रकार से पुरुष की भी परीक्षा की जाती है।

॥ ओ३म् ॥

क्रांतिवीर विनायक दामोदर सावरकर

—राजेशार्य आट्टा पानीपत-१३२१२२, (मो०: ०९९९१२९१३१८)

प्रिय पाठकवृन्द ! धूर्त अंग्रेजों के षड्यन्त्रकारी मस्तिष्क से उपजी विचारधारा कि भारत में बीसों राष्ट्र हैं का समर्थन करते हुए श्री नेहरू जी ने भी लिख दिया कि अतीत में भारत का विकास एक बहुराष्ट्रीय राज्य के रूप में हुआ। सम्भवत: उसी विघटनकारी विचार से पोषण पाकर दलितों के नेताओं ने लिखा हो कि छोटे-छोटे राज्यों में बंटा भारत कभी एक देश नहीं रहा। इनकी समीक्षा सम्बन्धित पुस्तकों में की जा चुकी है। पर अभी मई २०२२ में श्री राहुल गांधी (कांग्रेस अध्यक्ष) ने लन्दन में उसी विचार को दोहराते हुए कहा कि भारत तो राज्यों का संघ मात्र है, एक राष्ट्र नहीं। मोदी सकार की निन्दा करने के चक्कर में वे देश को गिरा गये।

मुझे लगा कि बार-बार बोले गए झूठ को सच मानकर फिर से कोई भारत को बांटने का सपना न पाल ले। अत: विदेशी यात्री की साक्षी ले लेनी चाहिए। सभी यात्री यहाँ भारत की यात्रा करने आते थे, पंजाब, बिहार या गुजरात आदि प्रान्तों की नहीं। लगभग ६३० ई० में हमारे देश में पहुँचा चीनी बौद्ध यात्री ह्वानसांग हमारे देश भारत के विषय में लिखता है—

"प्रदेश जो भारतवर्ष में सम्मिलित हैं प्राय: पंच भारत कहलाते हैं। क्षेत्रफल इस देश का लगभग ९०००० ली (एक चीनी मील=लगभग 633 गज) है। इसके तीन तरफ समुद्र है और उत्तर में हिमालय पहाड़ है। उत्तरी विभाग चौड़ा है और दक्षिणी भाग पतला । इसकी शक्ल अर्द्ध चन्द्र के समान है। सम्पूर्ण भूमि लगभग सत्तर प्रान्तों में विभक्त है। ऋतुयें विशेषत: गर्म हैं नदियों की बहुतायत से भूमि में तरी है। उत्तर में पहाड़ और पहाड़ियों का समूह है, भूमि सूखी और नमकीन है। पूर्व में घाटियां और मैदान हैं, जिनमें पानी की अधिकता है और अच्छी खेती होने के कारण, फल-फूल और अन्नादि की अच्छी उपज होती है। दक्षिणी प्रान्त जंगलों और जड़ी-बूटियों से भरा है। पश्चिमी भाग पथरीला और ऊसर है।" पृ० ३४-३५, अनु० ठाकुर प्रसाद शर्मा)

प्रत्येक व्यक्ति की कार्य शैली अपनी होती है। यदि उद्देश्य अच्छा है तो केवल शैली भिन्न होने मात्र से ही उसका विरोध या उससे घृणा करना उचित नहीं है। वीर सावरकर के समय काला पानी की जेल में कुछ निडर देशभक्त थे, जो उनकी शैली से सहमत नहीं थे, पर उनके समझाने पर बाद में वे मान गये। यहाँ आने के बाद भी बहुत से व्यक्तियों(कांग्रेसी व कम्युनिस्ट) का उनकी कार्यशैली से विरोध रहा। देश स्वतन्त्र होने के बाद भी उनके विरोधियों ने उन्हें जेल में डलवाया। जबकि प्रत्यक्षत: अंग्रेजों की पार्टियों (भोज आदि) में शामिल होने वाले लोग सत्ता सुख भोगते रहे।

आज वीर सावरकर इतिहास बन चुके हैं। देश की नई पीढ़ी उनके इतिहास को जानना चाहती है, पर कुछ राजनीतिक लोग अपने स्वार्थ के लिए बिना प्रसंग ही उनको अपमानित करते रहते हैं। जबकि सत्य यही है कि संसार से जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे-बुरे कर्म उनके साथ ही गये हैं। वे ही उन्हें सुख-दु:ख प्रदान करने में सहयोगी होंगे। यहाँ उनका यशोगान या अपमान उन्हें कोई लाभ नहीं पहुँचायेगा। हाँ, उनकी

विचारधारा को अपनाकर राष्ट्र को अवश्य लाभ-हानि होगी। यह देश के प्रबुद्ध नोगरिकों को देखना है कि राष्ट्र के स्थायी लाभ के लिए हमें किस महापुरुष के पग-चिह्नों पर चलना है।

कई बार की तरह फिर से श्री राहुल गांधी की राजनीति का पहिया उसी पटरी पर चढ़ गया—सावरकर ने अंग्रेजों से माफी माँगी, फिर वे वीर कैसे हुए।

मुझे लगता है कि ऐसे महान् देशभक्तों के प्रश्नों का उत्तर लगभग दो हजार वर्ष पूर्व संस्कृत के महाकवि भास ने दे दिया था। जब दुर्योधन ने पाण्डवों को पाण्डु के पुत्र न कहकर उन्हें देवपुत्र (नियोगज होने के कारण) बताते हुए कहा था कि जब वे हम मनुष्यों के बन्धु ही नहीं हैं तो फिर वे पिता के धन के अधिकारी कैसे हो सकते हैं। तब महकवि ने वासुदेव कृष्ण के मुख से कहलवाया—

"हे इतिहास के जानने वाले दुर्योधन ! तुम्हारे पिता धृतराष्ट्र महर्षि वेदव्यास के नियोग से उत्पन्न हुए थे। फिर वे अपने पिता विचित्रवीर्य के धन (राज्य) के उत्तराधिकारी कैसे हो सकते हैं?"

क्या कोई बताएगा कि अंग्रेजों से 'केसर-ए-हिन्द' का सम्मान पाने वाले गांधी जी भारत के 'राष्ट्रपिता' कैसे हो सकते हैं?

क्या कोई बताएगा कि नेहरू परिवार के समधी पण्डित जगतनारायण मुल्ला ने (ब्रिटिश सरकार से ५०० रु० प्रतिदिन फीस लेकर) पं० रामप्रसाद बिस्मिल आदि को फांसी पर चढ़वाने का जोर क्यों लगाया? बाद में हाईकोर्ट के जज बने इनके बेटे आनन्द नारायण मुल्ला को कांग्रेस ने राज्यसभा का सदस्य क्यों बनाया?

वीर भगतसिंह ने 'काकोरी के शहीदों की फांसी के हालात' में पं० रामप्रसाद बिस्मिल के पत्र की अंतिम पंक्तियां लिखी हैं—"सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पण्डित जगतनारायण (सरकारी वकील जिसने फांसी लगवाने के लिए बहुत जोर लगाया था) को अन्तिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथपथ रुपयों से चैन की नींद आए। बुढ़ापे में ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।" (भगतसिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज, पृ० ७२)

हम न तो नेहरू जी की देशभक्ति पर शक करते हैं और न उनके पिता द्वारा उनकी रिहाई के लिए माफी माँगने पर आपत्ति करते हैं, क्योंकि केाई भी देशभक्त जेल से बाहर आकर ही देश के लिए कुछ कर पायेगा। पर क्या कोई बताएगा कि पंजाब की नाभा जेल में बन्दी नेहरू को मात्र एक बार की प्रार्थना (माफी) पत्र लिखते ही मात्र १२ दिन में छोड़ दिया गया, जबकि उसी अंग्रेज सरकार ने कई बार तथाकथित माफीनामा लिखने के बाद भी सावरकर बन्धुओं को लगभग दस वर्ष बाद काला पानी (अंडमान) की जेल से भारत की जेल (रतनागिरि) में स्थानान्तरित किया व जनता के प्रयास के बाद भी तीन वर्ष जेल में रखकर सशर्त रिहाकर वर्षों तक नजरबन्दी में क्यों रखा?

हमें कोई आपत्ति नहीं है कि अंग्रेज सरकार ने श्रीमती कमला नेहरू के बीमार पड़ने पर श्री जवाहरलाल नेहरू को सजा पूरी होने से पहले ही न केवल छोड़ दिया, अपितु पत्नी का इलाज करवाने के लिए उन्हें विदेश जाने की अनुमति भी दी, पर उन्हीं अंग्रेजों ने गणेश सावरकर की पत्नी के मरने की सूचना भी अंडमान जेल में बन्दी सावरकर बन्धुओं को क्यों नहीं दी?

क्या यह माना जाए कि कुछ लोग धन के बल पर अंग्रेजों से अपनी जान-पहचान बनाते रहे और अपने काम निकलवाते रहे। जिनकी जान पहचान नहीं थी, वे जेल में सड़ते रहे। आज कांग्रेस के युवराज सवाल पूछते हैं कि यदि सावरकर वीर थे, तो उन्होंने जेल से बाहर आने के लिए माफी क्यों माँगी? अच्छा होता यही बात ये नेहरू जी

से पूछ लेते, जिन्हें न तो नारियल का तेल निकालने के लिए कोल्हू में बैल की तरह जुतना होता था, न नारियल के छिलकों की रस्सी बनाने के लिए उनके हाथों से खून बहता था, न उन्हें सप्ताह-सप्ताह भर का एकान्तवास मिलता था, न खड़ी बेड़ी डाली जाती थी। फिर भी वे जेल से बाहर आने के लिए व्याकुल थे, क्यों? वे (नेहरू जी) लिखते हैं–

"कभी-कभी जिन्दगी की कोमल वस्तुओं के लिए शरीर अकुला उठता, शारीरिक सुख-भोग, आनन्दप्रद वातावरण, मित्रों के साथ दिलचस्प बातचीत और बच्चों के साथ खेलने की इच्छा जोर पकड़ उठती थी। किसी अखबार में किसी तस्वीर या फोटो को देखकर पुराना जमाना सामने आ खड़ा होता–उन दोनों की बातें सामने आ जातीं, जब जवानी में किसी बात की फिकर न थी। ऐसे वक्त पर घर की याद की बीमारी बुरी तरह जकड़ लेती और वह दिन बड़ी बेचैनी के साथ कटता।" (मेरी कहानी, पृ० ४१७)

घर से बाहर (जेल में) जाकर घर की याद आना स्वाभाविक है, पर एक देशभक्त का शरीर यदि कोमल वस्तुओं और शारीरिक सुख-भोग के लिए अकुलाता हो, तो समझना चाहिए कि वह लक्ष्य से भटक चुका है।

जहाँ तक सावरकर के माफीनामे की बात है–जेल में बन्दी एक क्रांतिवीर के लिए बाहर आने का एक ही उपाय था–तभी वह देश के लिए कुछ कर पाता। कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक एम० एन० राय इसी का प्रयोग करके १२ साल की सजा, ४ साल १० महीने व ११ दिन में पूरी करके रिहा हो गये। जबकि सावरकर को तो ५० साल की सजा मिली थी। उसी अंडमान जेल में बाद में (१९३३ ई०) भगतसिंह के साथी महावीर सिंह भूख हड़ताल के समय मर गए और उनके शव को समुद्र में फैंक दिया गया। आज तक भारत में कितने स्मारक उस बलिदानी वीर की याद में बने हैं कोई बताए तो !

श्री प्रमोद कुमार (कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित) ने 'कालापानी' में वीर सावरकर आदि के माफीमे को खूब उछाला हैं अंत में जाकर वे लिखते हैं–"२४ जुलाई १९३७ को सेलूलर (अंडमान) जेल के १८७ राजनैतिक कैदियों ने एक बार फिर भूख-हड़ताल कर दी, जो वहाँ की अंतिम भूख-हड़ताल थी। उनके साथ-साथ ७२ राजनैतिक कैदियों ने 'काम रोको हड़ताल' भी प्रारंभ कर दिया था। इस बार की भूख-हड़ताल का मुख्य उद्देश्य उन्हें जेल से रिहा करना था। ...इन राजनैतिक बन्दियों की उन माँगों के पीछे मुख्य कारण यह था कि १९३७ के प्रांतीय चुनावों के बाद बनी कांग्रेस की छह प्रांतीय सरकारों ने अपने आश्वासन के अनुसार सभी राजनैतिक बन्दियों को रिहा कर दिया था। (बंगाल में कांग्रेस की सरकार नहीं थी। वहाँ गवर्नर ने मना कर दिया तो) स्वयं सुभाष चन्द्र बोस ने यह धमकी दी कि यदि कैदियों को अंडमान से स्थानांतरित नहीं किया गया तो पूरे बंगाल में आंदोलन प्रारम्भ कर दिया जाएगा। इन भूख हड़तालियों के समर्थन में देवली कैम्प में बन्द १५० राजनैतिक बन्दियों ने भी भूख हड़ताल प्रारम्भ कर दी थी।

बाद में, महात्मा गांधी द्वारा किये गये हस्तक्षेप के बाद लार्ड लिनलिथगो तथा महात्मा गांधी के मध्य हुए एक समझौते से, अंडमान के राजनैतिक कैदियों के राजनैतिक कैदियों के स्थानंतरण का मार्ग खुल सका। इस समझौते के अनुसार यह तय किया गया कि उन सभी क्रांतिकारी (आतंकवादी) कैदियों को रिहा कर दिया जाएगा, जो यह लिखित शपथ पत्र देंगे कि भविष्य में वे किसी प्रकार की हिंसक गतिविधि में हिस्सा नहीं लेंगे।

सभी भूख-हड़ताल करने वाले राजनैतिक

(शेष पृष्ठ २७ पर)

आओ, श्रद्धामय हो जाएं

—सुधांशु आर्य आट्टा पानीपत-१३२१२२, (मो०: ७४९७००६३५३)

प्रिय पाठकवृन्द ! प्रेम जब अपने से बड़े पूज्य गुरुजनों के प्रति होता है, तो वह श्रद्धा कहलाता है और यही प्रेम जब अलौकिक सत्ता के प्रति होता है तो भक्ति कहलाता है अर्थात् श्रद्धा से भक्ति का मार्ग खुलता है जो हमें मुक्ति की ओर ले जाता है। आज आर्यसमाज में तर्क की अधिक प्रधानता दिखाई देती है, श्रद्धा का बहुत अभाव सा हो गया है। महात्मा आनन्द स्वामी कहा करते थे–"श्रद्धा के न होने से आर्य समाज शिथिल हुआ जाता है। याद रखो–जहाँ श्रद्धा है, वहीं रस है, वहीं मिठास है, वहीं जीवन है। श्रद्धा के बिना कभी कुछ नहीं होता।"

वर्तमान अवस्था से खिन्न हुआ मन अतीत में खो जाना चाहता है और प्रेरणा पुंज के रूप में श्रद्धा की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द के विराट् व्यक्तित्व का स्मरण करता है, जिसके प्रत्येक वाक्य से, कार्य से व भावना से श्रद्धा टपकती थी। जिसने समाज की उन्नति के लिए व्यक्तिगत भावनाओं की बलि दे दी। कल्याणमार्ग का पथिक बनकर भी जिसने अपने अतीत के अवगुण सबके सामने प्रकट किये। अन्तिम समय में अपने पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति को कहा–

"इस शरीर का कुछ ठिकाना नहीं, मैं शायद ही उठूं । तुम एक काम जरूर करना। मेरे कमरे में आर्यसमाज के इतिहास की सामग्री पड़ी है, उसे सम्भाल लेना और समय निकालकर इतिहास जरूर लिख डालना। एक बात और कहता हूँ। इतिहास के लिखने में मुझे माफ न करना। मैंने बड़ी-बड़ी भूलें की हैं। तुम्हें तो मालूम है कि मैं क्या करना चाहता था और किधर पड़ गया।

ऋषि के प्रति यह उनकी श्रद्धा ही थी, जिसने उनकी वकालत छुड़वा दी व गले में झोली डालकर घर-घर से भीख मंगवा दी; गुरुकुल के लिये अपना व अपने पुत्रों का त्याग करने पर भी जिसे सन्तोष नहीं हुआ और अपनी कमाई से बना मकान (किले जैसी कोठी) भी गुरुकुल को दान करवा दिया। उन्हीं के शब्दों में–"मैंने अपनी शक्ति के अनुसार अपने जीवन में वैदिक धर्म की सेवा की है। ऋषि दयानन्द की आज्ञा को शिरोधार्य करके वैदिक धर्म के पुनरुद्धार और आर्य जाति के उत्थान के लिए गुरुकुल का संचालन करता रहा हूँ। मैंने अभी गुरुकुल के लिए सब कुछ नहीं दिया। जालन्धर में मेरा जो मकान है उसमें अभी तक मेरी ममता विद्यमान हैं। मैं उसे भी मिटा देना चाहता हूँ, इस कारण मैं इस दान-पत्र के द्वारा वह मकान गुरुकुल कांगड़ी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को समर्पित करता हूँ।"

कॉलेज पक्ष के पक्षधर होने के कारण लाला लाजपत राय का गुरुकुल पक्ष वाले महात्मा मुंशीराम से मतभेद था। इसलिए उन्होंने महात्मा जी के कार्य में खूब रोड़े अटकाए, पर जब लाला जी को गिरफ्तार कर माँडले जेल भेजा गया, तो सन्तान की तरह पाला गया डी०ए०वी० कॉलेज उनसे सम्बन्ध तोड़ गया। तब महात्मा मुंशीराम ने 'सिविल मिलट्री गजट' में लाला जी की निष्कपट सफाई पेश की थी। पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति के शब्दो में कहूँ तो लाला जी को महात्मा जी अब एक घायल सेनापति के रूप में देख रहे थे। उनके हृदय से विरोध के भाव दूर हो गये थे।

जब लाला जी माँडले से लौटकर लाहौर आये तब उनसे मिलने के लिए महात्मा जी उनकी कोठी पर गये थे। दोनों भाई-भाई की तरह गले मिले। तब उनकी आँखें प्रेम के आंसुओं से भीगी थीं। बाद में महात्मा जी ने लाला जी को गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर आमन्त्रित किया। सौभाग्य-शाली लोगों ने इन दो धाराओं को मिलते देखा।

स्वामी श्रद्धानन्द का विशेष गुण यह था कि वे समाज हित को देखते हुए अपनी गलती मानने की पहल करते थे। एक बार किसी आर्यसमाज के उत्सव में मंच पर बैठे महात्मा मुंशीराम और स्वामी दर्शनानन्द में किसी बात पर मतभेद हो गया और दोनों जोर-जोर से उत्तर-प्रत्युत्तर देने लगे। सम्भवतः महात्मा मुंशीराम ने ही कोई कटु बात उन्हें कह दी। इसके बाद दोनों स्वतः शान्त हो गये। बाद में गुरुकुल कांगड़ी जाकर महात्मा मुंशीराम ने अपनी गलती मानते हुए एक पत्र लिखा और एक सेवक के हाथ गुरुकुल ज्वालापुर भेजा। स्वामी दर्शानानन्द ने जब पत्र पढ़ा, तो उन्होंने पत्र के उत्तर में पण्डित राज जगन्नाथ का श्लोक लिखा–

अस्मानवेहि कलमानलमाहतानां
येषां प्रचण्ड मुसलैरवदातवैव।
स्नेहं विमुच्य सहसा खलताम्प्रयान्ति
येस्वल्पपीडावशान्न वयं तिलास्ते ॥

"हमें चावल समझो, जो मूसलों के प्रहार से सफेद (उज्ज्वल) होते जाते हैं। जो थोड़ी सी मार से ही स्नेह (तेल) छोड़कर खल (दुष्ट) बन जावें, हम वे तिल नहीं हैं।"

जब महात्मा मुंशीराम जी ने संन्यास लेने की इच्छा प्रकट की तो इन्द्र विद्यावाचस्पति ने कहा– पिता जी, आप तो पहले ही संन्यासी हैं, वेष बदलने से क्या लाभ? इस पर महात्मा जी बोले– इन्द्र, तुझे तो मालूम ही है कि मैं युक्ति के आधार पर कोई कदम नहीं उठाता, केवल श्रद्धा से प्रेरित होकर ही उठाता हूँ। यह निश्चय भी मैंने श्रद्धावश ही किया है। मेरा यह निश्चय अटल है।

संन्यास लेते समय उन्होंने घोषण की–"मैं सदा सब निश्चय परमात्मा की प्रेरणा से श्रद्धा-पूर्वक ही करता रहा हूँ। मैंने संन्यास भी श्रद्धा की भावना से प्रेरित होकर ही लिया है। इस कारण मैंने 'श्रद्धानन्द' नाम धारण करके संन्यास में प्रवेश किया है। आप सब नर-नारी प्रभु से प्रार्थना करें कि वे मुझे अपने इस नये व्रत को पूर्णता से निभाने की शक्ति दें।"

स्वामी जी की श्रद्धा और गहरी धार्मिक भावना का ही परिणाम था कि वे जो कुछ कहते थे वह श्रोताओं के हृदयों को चीरता हुआ। चला जाता था। जबकि उस बोले हुए वक्तव्य को लिखकर देते तो कुछ प्रभावशाली नहीं होता था, क्योंकि वे तो केवल शब्द थे, उनमें वह हृदय नहीं था पर वे शब्द हमेशा प्रभावहीन नहीं होते थे। गुरुवर दयानन्द की जन्म शताब्दी पर दी गई श्रद्धांजलि स्वामी श्रद्धानन्द की श्रद्धा को दर्शाती है–

"ऋषिवर ! आपको भौतिक शरीर त्यागे ४१ वर्ष हो चुके हैं, परन्तु आपकी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय-पटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। ....भगवन् ! मैं आपका ऋणी हूँ और उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। इसलिए जिस परमात्मा की असीम गोद में आप परमानन्द का अनुभव कर रहे हैं, उसी से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आपका सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे।"

❑❑

• संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

बेटी पढ़ाओ, देश धर्म बचाओ

प्रस्तुति : धर्मेन्द्र जिज्ञासु (महामन्त्री आर्य वीर दल हरियाणा)

महात्मा मुंशीराम (संन्यास के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द) जी ने अपनी डायरी में लिखा है–

१९ अक्टूबर १८८८ को मैं कचहरी से लौटकर घर आया तो बेटी वेदकुमारी दौड़ी हुई आई और जो भजन स्कूल में सीखा था सुनाने लगी–

इक बार ईसा ईसा बोल,
तेरा क्या लगेगा मोल।
ईशा मेरा राम रमैया,
ईशा मेरा कृष्ण कन्हैया॥

बेटी के मुंह से सुनकर मुंशीराम जी को बड़ा धक्का लगा कि हमारी पुत्रियों को मिशन स्कूलों में अपने पूर्वजों की निन्दा सिखाई जाती है। उन्होंने निश्चय कर लिया कि हमें अपनी पुत्री पाठशाला अवश्य खोलनी चाहिए। यह छोटी सी घटना भारत प्रसिद्ध जालन्धर कन्या महाविद्यालय की स्थापना के आन्दोलन का कारण बनी। (संदर्भ कल्याण मार्ग का पथिक, महात्मा मुंशीराम)

श्री मुंशीराम जी ने तथा लाला देवराज जी ने कन्या पाठशाला की स्थापना लिए अत्यन्त पुरुषार्थ किया परन्तु पौराणिक हिन्दू भाईयों ने अपनी सारी सामर्थ्य स्त्री शिक्षा के प्रसार के विरोध में लगा दी।

भूमंडल प्रचारक मेहता जैमिनी जी बताते हैं कि पौराणिक हिन्दू भाइयों द्वारा स्त्री शिक्षा का इतना विरोध किया गया कि विद्यालय के लिए १५-२० छात्राएं ना मिलीं। सनातनी हिन्दू भाईयों ने इसके विरोध में प्रचार किया कि 'कोई हिन्दू अपनी पुत्री को पढ़ाने न भेजें। लड़कियां पढ़ लिखकर निर्लज्ज होकर अपने पति को पत्र लिखा करेंगी।'

महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी), दीवान बद्री दास जी व लाला देवराज जी को स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए कितनी गालियां मिलीं, कितना विरोध सहना पड़ा उसके लिए उस काल के पौराणिक हिन्दू समाचार पत्रों 'मित्र विलास' के अंकों को देखा जा सकता है। (संदर्भ आर्य समाज का इतिहास, प्रथम भाग, लेखक इन्द्र विद्यावाचस्पति, सम्पादक राजेन्द्र जिज्ञासु)।

पौराणिक हिन्दू भाईयों द्वारा स्त्री शिक्षा के विरोध का कारण–

महाभारत युद्ध के १००० वर्ष पूर्व भी वैदिक सनातन संस्कृति में विकृतियाँ आनी शुरू हो गई थीं। महाभारत युद्ध के पश्चात और तीव्रता से बढ़ने लगीं। धर्म और समाज में अनेक तरह के पाखण्ड वेद विरुद्ध बातें मिलती गईं यहाँ तक कि स्त्री और शूद्रों से पढ़ने का अधिकार छीन लिया गया। **'स्त्री शूद्रौ न नाधीयताम्'** इस तरह की बातें धर्म का अंग बन गईं। आदि शंकराचार्य जी ने कहा नारी नर्क का द्वार है? महात्मा कबीर ने कहा–

नारी की झांई परत, अंधा होत भुजंग।
कबिरा उनकी क्या गत, जो नित नारी के संग॥

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्य आनन्द से कहा कि स्त्रियों को संघ में प्रवेश से यह धर्म ५०० वर्ष में समाप्त हो जायेगा परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने इन सारे स्त्री विरोधी विचारों का वेद के आधार पर जोरदार खण्डन किया और सत्यार्थ प्रकाश में लिखा–

क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें?

उत्तर–अवश्य देखो स्रोत सूत्र आदि में–

इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्।

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों

का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि वेद शास्त्रों को पढ़कर पूर्ण विदुषी हुई थीं यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। महर्षि दयानन्द जी के समय में ही फिरोजपुर में अनाथालय के साथ ही कन्या पाठशाला की स्थापना हो गई थी। ऐसे मेरठ में भी एक कन्या पाठशाला भी महर्षि दयानन्द जी के जीवन काल में स्थापित हो गई थी।

सनातन धर्म रक्षिणी सभा–

महर्षि दयानन्द जी का अनेक प्रकार से विरोध करने के लिए लाहौर में पण्डित श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सनातन धर्म रक्षिणी सभा बनाई। उसके सहायक पण्डित भानु दत्त शुक्ल थे। यह वही श्रद्धाराम फिल्लौरी हैं जिन्होंने एक तरफ तो हिन्दुओं के लिए "ओम जय जगदीश हरे" आरती लिखी है तथा दूसरी तरफ ईसाईयों से पैसे लेकर हिन्दुओं को धर्म भ्रष्ट करने के लिए "ईसा मसीह की प्रशंसा में" गीत लिखे।

कलकत्ता के अंग्रेजी दैनिक 'इंडियन मिरर' ने २३ जून सन् १८७७ के अंक में लिखा था–

यद्यपि शिक्षित पुरुष इस प्रशंसनीय कार्य में योग देते हैं परन्तु नगर के ब्राह्मणों के विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता, जो प्रत्येक सामाजिक और धार्मिक सुधार के खुले हुए शत्रु पंडित श्रद्धाराम के नेतृत्व में इस अल्पसंख्यक समाज को जन्मते ही नष्ट करने का यत्न कर रहे हैं। उन्होंने केवल एक सभा सनातन धर्म रक्षिणी के नाम से स्थापित की है, जिसके उद्देश्य आर्यसमाज के उद्देश्यों से सर्वथा प्रतिकूल हैं। वे पंडित दयानन्द सरस्वती के चरित्र और उद्देय के सम्बन्ध में भी सब प्रकार की झूठी बातें फैला रहे हैं। (संदर्भ– महर्षि दयानन्द का जीवन चरित, लेखक देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, अष्टादश अध्याय)

बेटी पढ़ाओ देश धर्म बचाओ आन्दोलन फैल गया–

आर्यसमाज के द्वारा कन्या विद्यालय जालन्धर की स्थापना होते ही कन्याओं को शिक्षा देने का उत्साह देश भर मे फैल गया। संयुक्त प्रान्त में प्रायः सभी बड़े–बड़े नगरों की आर्यसमाज के साथ कन्या पाठशाला स्थापित हो गईं। देहरादून, रुड़की, मुजफ्फरनगर, मथुरा, मैनपुरी, शाहजहाँपुर, पीली–भीत, इटावा, झांसी, बनारस, लखनऊ, दिल्ली आदि बड़े शहरों और गांवों में भी कन्या पाठशाला खुलती चली गईं, जिन्होंने भारत की बेटियों के उज्जवल भविष्य का रास्ता प्रशस्त कर दिया।

महर्षि दयानन्द जी ने पंजाब के होशियारपुर जिले के गांव की माता भगवती को उपदेश दिया तथा उन्हें स्त्री शिक्षा और समाज सुधार की प्रेरणा दी जिसका उन्होंने आजीवन पालन किया। महर्षि दयानन्द जी ने रमाबाई को भी ब्रह्मचारिणी रहकर भारत में स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार करने की प्रेरणा की थी परन्तु रमाबाई ने ईसाई बन कर शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन में हजारों हिन्दू लड़कियों को ईसाई बना दिया। विडम्बना यह है कि उसे आज आदर पूर्वक पंडिता रमाबाई कहा जाता है।

भारत धर्म महामण्डल–

आर्यसमाज के विरोध में काशी में सन् १९०० ई० में भारत धर्म महामण्डल की स्थापना हुई। जीत सत्य की ही होती है। अतः ना चाहते हुए भी महामण्डल को अगस्त १९०० ई० में दिल्ली में हुए सम्मेलन में स्त्री शिक्षा का समर्थन करना ही पड़ा।

बंगाल में श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने, महाराष्ट्र में जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे तथा प्रोफेसर कर्वे ने व महात्मा फुले तथा उसकी पत्नी ने स्त्री शिक्षा के लिए सराहनीय कार्य किया। उत्तर भारत में यह कार्य महर्षि दयानन्द के आदेश अनुसार आर्यसमाज ने किया।

शिक्षा, खेल, राजनीति, अंतरिक्ष, धर्म प्रचार

(शेष पृष्ठ २७ पर)

ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव

प्रस्तुति :–सौरभ कुमार शास्त्री (मो०–८९२०६८०८९६)

ईश्वर निराकार है। उसकी कोई शक्ल सूरत नहीं है। उसकी कोई मूर्ति भी नहीं बन सकती। इसी कारण वह आँख से देखा नहीं जा सकता। नाक, कान, जिह्वा, त्वचा-इन्द्रियाँ भी उसका अनुभव नहीं कर सकतीं।

ईश्वर सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा सर्वत्र व्यापक है। वह सूक्ष्म इतना है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु में भी रमा हुआ है। कोई अणु भी उसकी उपस्थिति के बिना नहीं है। सभी जगह व्यापक होने के कारण उसे महान् से महान् भी कहा जा सकता है।

ईश्वर अन्तर्यामी है। आत्मा शरीर में बहुत सूक्ष्म पदार्थ है परन्तु ईश्वर उस आत्मा में भी विद्यमान है। इसी कारण से ईश्वर को अन्तर्यामी कहा गया है।

ईश्वर अजन्मा, अनन्त और अनादि है–वह कभी उत्पन्न नहीं होता है। जो वस्तु उत्पन्न होती है वह मरती भी अवश्य है। क्योंकि ईश्वर कभी उत्पन्न नहीं होता इसलिए वह कभी मरता भी नहीं। वह सदा रहने वाला है।

ईश्वर ज्ञानवान् तथा न्यायकारी है। संसार में फैले सम्पूर्ण सद्ज्ञान का स्रोत ईश्वर ही है। वह पूर्ण ज्ञानी है। वेदों के रूप में उसने ही सारा ज्ञान प्राणीमात्र के कल्याण के लिए दिया है। वह सभी जीवों के कर्मों को देखता तथा जानता है। उन्हें उनके कर्मों के अनुसार यथायोग्य सुख व दुःख के रूप में फल देता है। सभी जीव कर्म करने में स्वतन्त्र हैं परन्तु उन कर्मों के अनुसार फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र हैं। यानि किए हुए कर्म का फल भोगने में जीव की मर्जी नहीं चलती। उसे अवश्य फल भोगना ही पड़ता है।

उत्पत्ति और प्रलय करने वाला भी ईश्वर ही है। सृष्टि की रचना करना, सभी जीवों को उनके कर्मों के अनुसार उत्पन्न करना, तथा सृष्टि का प्रलय करना भी उसी के हाथ में है।

ईश्वर आनन्द-स्वरूप है। उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है। जैसे सर्दी में ठिठुरते हुए को आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर की जीव से समय या स्थान की दूरी नहीं है। यह दूरी ज्ञान की है। पवित्र मन से उस ईश्वर का ध्यान करने से उसकी समीपता अनुभव होती है।

ईश्वर दयालु है। उसने दया करके ही अनन्त पदार्थ हमारे सुख के लिए दे रखे हैं। जैसे वायु, जल, अन्न, सब्जियाँ, फल, औषधियाँ आदि।

ईश्वर निर्विकार है। उसमें राग, द्वेष, मोह, लोभ, काम, क्रोध, अहंकार आदि विकार नहीं आते।

ईश्वर अनुपम है। उसके समान दूसरा कोई नहीं है। उपरोक्त गुणों को धारण करने वाला वह अकेला ही है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। उसे अपने दया, न्याय, सृष्टि की रचना, प्रलय आदि काम करने के लिए किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। बिना हाथ, पैर सहज में ही अपने सभी काम वह स्वयं ही कर लेता है।

ईश्वर की प्रेरणा–मनुष्य जब कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह तथा निर्भयता महसूस होती है, वह ईश्वर की तरफ से ही होती है। मनुष्य जब कोई गलत काम करने लगता है उसे भय, शंका, लज्जा जो हाती है वह भी ईश्वर की तरफ से होती है।

जो मनुष्य सब का उपकार करने और सब

को सुख देने वाले हैं ईश्वर उन्हीं पर कृपा करता है। कोई मनुष्य जगत का जितना उपकार करता है उसको उतना ही सुख ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होता है।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।

(यजुर्वेद ४०, १)

अर्थ–इस गतिशील संसार में जो कुछ भी है ईश्वर उस सब में बसा हुआ है।

न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः ।

(यजुर्वेद ३२, ३)

अर्थ–उस परमात्मा की कोई आकृति या मूर्ति नहीं है। उसे नापा या तोला नहीं जा सकता। उस परमात्मा का नाम स्मरण अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करना अर्थात् धर्मयुक्त कर्मों का करना बड़ी कीर्ति देने वाला है।

न सदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुसा पश्यति कश्चनैनम् ।

हृदा हृदिस्थं मनसा च एनमेव विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥ श्वेताश्वतर उपनिषद्

अर्थ–परमात्मा का कोई रूप (आकृति, वर्ण, स्वरूप) नहीं जिसे आँखों से देखा जा सके। उसे कोई भी आँखों से नहीं देखता। वह हृदय में स्थित है। जो उसे हृदय से तथा मन से जान लेते हैं वे आनन्द को प्राप्त करते हैं।

स पर्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम्
अस्नाविरम् शुद्धम् अपापविद्धम् ।
कविः मनीषी परिभूः स्वयंभूः याथातथ्यतः
अर्थात् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

(यजुर्वेद ४०, ८)

अर्थ–वह परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। वह शीघ्रकारी है। उसका कोई शरीर नहीं है। वह छिद्र-रहित है तथा उसके टुकड़े नहीं हो सकते। वह नस नाड़ी आदि के बन्धन से रहित है। अविद्या आदि दोष न होने से वह सदा पवित्र है। वह कभी भी पाप कर्म नहीं करता। वह सर्वज्ञ है। सब जीवों की मनोवृत्तियों को वह जानता है। वह दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला है। वह परमात्मा अनादि स्वरूप वाला है, उसको कोई बनाने वाला नहीं है, उसके माता पिता नहीं हैं। उसका गर्भवास, जन्म, मृत्यु आदि नहीं होते। वह परमात्मा सदा से प्रजा के लिये वेद के द्वारा सब वेद के द्वारा सब पदार्थों का अच्छी तरह से उपदेश करता है।

एष सर्वेषु भूतेषु गूढ़ात्मा न प्रकाश्यते।
दृश्यते तु अग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ (कठोपनिषद्)

अर्थ–वह परमात्मा सब प्राणियों अप्राणियों में छिपा हुआ है। वह सामने नहीं है। सूक्ष्म दृष्टि वाले लोग अपनी तीव्र और सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उसे जान लेते हैं।

तिलेषु तैलं दधिनीव सर्पिरापः स्त्रोतः सु अरणीषु चाग्निः।
एवमात्मात्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैनं तपसायोऽनुपश्यति ॥ श्वेताश्वतर उपनिषद्

अर्थ–जैसे तिलों में तेल, दही में घी, झरनों में पानी और अरणी नाम की लकड़ी में आग रहती है। और तिलों को पीलने से, दही को बिलोने से, और अरणियों को रगड़ने से ये प्रकट होते हैं। वैसे ही जीवात्मा में परमात्मा रहता है और वह नहीं मिलता है। सत्य और तप से उसे जाना जा सकता है।

यथा ऊर्णानाभिः सृजते गृह्यते च यथा पृथिव्याम् ओषधयः संभवन्ति।
यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथा अक्षरात् संभवति इह विश्वम् ॥

(मुण्डकोपनिषद्)

अर्थ–जैसे मकड़ी अपने शरीर के अन्दर से जाले बनाती है और फिर उन्हें अपने अन्दर ही समेट लेती है, जैसे पृथिवी से औषधियाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे जीवित पुरुष के शरीर मे बाल निकलते हैं उसी प्रकार ईश्वर के प्रकृति रूपी शरीर से यह संसार बन जाता है। ❑❑

आर्यसमाज का तप

–प्रस्तुति : दिनेश कु० शास्त्री (मो०–९६५०५२२७७८)

पराधीन भारत में अंग्रेज पादरियों और अधिकारियों की आर्यसमाज के अनुयायियों पर क्रूर दण्डात्मक दृष्टि थी। इसके लगभग २४ उदाहरण आर्यसमाज के विद्वान् आचार्य पं० सत्यप्रिय शास्त्री, प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार ने अपनी पुस्तक 'भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में आर्यसमाज का योगदान' में दिये हैं। वह पुस्तक के छठे अध्याय में लिखते हैं कि आर्यसमाज सामान्यतः अपने जन्मकाल से ही विशेषकर श्याम जी कृष्णवर्मा तथा लाला लाजपतराय के समय से ब्रिटिश सरकार के प्रबल सन्देह का विषय बन गया था। आर्यसमाज के भयंकर राजद्रोही होने का विचार विदेशी सरकार तक कैसे पहुँचा? यह हम आर्यसमाज के लौहपुरुष अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के शब्दों में ही यहाँ पर उद्धृत कर रहे हैं–

"गरीब हिन्दुओं को वाग्युद्ध में सदा पछाड़ने के अभ्यासी पादरियों को जब आर्यसमाज में पले बालकों तक से पटकनी पर पटकनी मिलने लगी तब वे ओछी करतूतों पर उतर आये और उन्होंने सरकारी अधिकारियों को यह विश्वास दिलाना आरम्भ कर दिया कि आर्यसमाज से क्रिश्चियन मत को तो कम भय है अधिक भय गवर्नमेन्ट को है।" (कल्याण मार्ग का पथिक पृ० १४६)

इस विश्वास के कारण (जो किसी भी इतिहासकार की दृष्टि में अनुचित नहीं कहा जा सकता है) अंग्रेजी सरकार ने आर्यसमाज को कुचलने तथा दबाने का पूर्ण निश्चय कर लिया था। स्थान-स्थान पर आर्यसमाजियों तथा आर्यसमाज से सम्बन्धित पुरुषों को उत्पीड़ित किया जाने लगा था। उस समय की सरकारी नौकरियों में विद्यमान आर्यसमाजियों पर तो मानो विपत्तियों का पहाड़ ही टूट पड़ा था क्योंकि सरकारी नौकरी में होने के कारण उनको पीड़ित, दुःखी तथा त्रस्त करना सरकार के लिए बहुत ही सरल काम हो गया था। उस समय के आर्यसमाजियों पर क्या बीती, इसका दिग्दर्शन करने के लिए कुछ घटनाओं का संक्षिप्त संग्रह यहाँ प्रस्तुत किया जाता है। इससे पाठकों को यह भी ज्ञात हो जायेगा कि विपदा और आंधी के उस तूफानी दौर तथा काल में आर्यसमाजियों ने किस प्रकार अपनी बहादुरी का परिचय दिया। वे टूट तो गये परन्तु झुके नहीं और किस प्रकार अपनी लौकिक अनित्य सम्पदाओं के सर्वस्व की बाजी लगाकर भी उन्होंने अपने सिद्धान्तों, मान्यताओं तथा आर्यत्व की रक्षा करके उस विपत्ति की घड़ी में खरे उतरे, यह एक गौरव का विषय है।

आर्यसमाजियों से दुर्व्यवहार की कुछ घटनायें–

१. मैं सायंकाल सड़क पर घूम रहा था, सामने से घोड़े पर सवार नाभा के वृद्ध राजा हरि सिंह आ रहे थे। वह अक्सर लाहौर आते थे और मैं उन्हें पहचानता था। मैंने हाथ जोड़कर उनका उचित सत्कार किया। उन्होंने पूछा कि पढ़ते हो? मेरे उत्तर देने पर पूछा कि कहाँ? मैंने कहा दयानन्द कॉलेज में। 'कहने लगे कि हंसराज से कह देना कि अंग्रेजों के साथ उलझना ठीक नहीं, जितने आर्यसमाजी तुम हो, उनके लिए तो मेरी फौज ही काफी है। राजा नाभा ने अपना सन्देश पहुँचाने के लिए अच्छा दूत चुना। उनके कथन से इतना

तो पता लगता है कि उस समय का राजनैतिक वायुमण्डल कैसा था? (आर्यसमाज के त्या० तप० सं० पृ० ३२)

२. गुलाबचन्द एक सिख रेजिमेण्ट में लेखक था। वह कर्तव्य परायण तथा सत्यप्रिय और परिश्रमी था। परन्तु साथ ही अधिकारियों को उत्तर देने में निर्भीक था। पहले तो उसकी बात की प्रशंसा होती थी किन्तु अब वही गुण कांटे की तरह खटकने लगा और उसे इसलिए पृथक् कर दिया कि वह आर्यसमाजी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्यसमाजी का अर्थ हुआ उद्दण्ड अर्थात् निर्भीक एवं सत्यवादी।

३. जिला करनाल के तीन जेलदारों में से एक आर्यसमाजी था। उसकी डायरी में लिख दिया गया कि वह जेलदार तो अच्छा है परन्तु इसका निरीक्षण किया जाना चाहिए क्योंकि वह आर्यसमाजी है।

४. एक डिप्टी कमिश्नर ने एक नगर के प्रमुख पुरुषों को बुलाकर कहा कि यदि तुम्हारे यहाँ कोई आर्यसमाजी रहता है तो उसे निकाल दो। स्वयं उन प्रमुख पुरुषों में ही दो आर्यसमाजी थे। उन्होंने पूछा कि आर्यसमाजियों के विरुद्ध क्या किया जाये? डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि कुछ करो, तुम्हारे विरुद्ध कोई भी कर्रवाई न होगी। वे बोले कि आप स्पष्ट निर्देश करें, तो उनका पालन किया जा सकता है और आप स्पष्ट कार्रवाई करने से डरते हैं तो फिर हममें यह साहस कहाँ है?

५. एक रेजीमेण्ट के सिपाही आर्यसमाजी थे। उन्हें यज्ञोपवीत उतार देने की आज्ञा दी गई। उन्होंने जाट सभा के द्वारा एक निवेदन पत्र भिजवाया जिसे आपत्तिजनक समझा गया।

६. एक मुसलमान जमादार ने एक यूरोपियन लैफ्टिनेण्ट को विवाद में हरा दिया। इसकी शिकायत हुई और मुसलमान को डांटकर कहा गया कि तुम आर्यसमाजी हो। उसने उत्तर दिया कि मैं तो मुसलमान हूँ। अधिकारी ने उसे और डांटा और कहा कि तुम मुसलमान आर्यसमाजी हो।

७. आर्यसमाज के प्रचारक पं० दौलतराम झांसी गये। वहाँ उन्होंने सिपाहियों को भी उपदेश दिया और उनसे अनाथालय के लिए चन्दा लाये। पण्डित जी पर अभियोग चलाया और दण्ड यह दिया गया कि या तो झांसी या उसके पांच मील के अन्दर रहने वाले तथा सरकार को १००० से २००० की आय पर कर देने वाले दो सज्जनों की जमानतें दिलाओ या एक वर्ष के कठोर कारावास दण्ड भुगतो। यों तो दौलतराम जी आगरे के खाते पीते घर के थे परन्तु झांसी में अजनबी थे। इसलिए झांसी में कारावास भुगतना पड़ा।

८. जोधपुर में वायसराय पधारे थे। उनके मार्ग में आर्यसमाज मन्दिर पड़ता था। पुलिस ने समाज वालों से कहा कि अपना फट्टा तथा झण्डा उतार लो। उनके इन्कार करने पर पुलिस ने ये दोनों चिह्न उतार दिये।

९. पंजाब की एक ब्रिगेड में आज्ञा दी गई कि सिपाही आर्यसमाज अथवा किसी अन्य राजनैतिक सभा में न जाया करें ।

१०. १०वीं जाट रेजीमेण्ट जो कि सन् १८९८ में बनारस में थी, तब इसमें धार्मिक दृष्टि से आर्यसमाज का प्रभाव था। जब सन् १८९९ में यह सिल्चर पहुँची तो उसके (अंग्रेज) सेनापति को हिन्दी में बहुत ऐसे पत्र मिले जिन पर हिन्दी में ओ३म् लिखा था जिसे कुछ अधिकारियों ने सन्देह की नजरों से देखा। जब १९०४ में यह रेजीमेण्ट कानपुर पहुँची तो उसके सैनिक आर्यसमाज के सत्संगों में जाने लगे तथा आर्यसमाज से अपना सम्पर्क बढ़ाने लगे। जब अधिकारियों को यह बात विद्रोह सा जान पड़ा तब उन्होंने उनके आर्यसमाज के सत्संगों, सभाओं में जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। साथ ही आर्यसमाजी साहित्य छावनी में लाने पर भी कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया। सितम्बर १९०५ में सुरजनसिंह नामक एक सिपाही इसी

अपराध में दण्डित किया गया था कि उसने स्वदेश प्रचार के बारे में बुलाई गई आर्यसमाज की एक सभा में भाग लिया था। पुस्तक में २४ घटनाओं में से हमने आरम्भ की १० घटनायें ही इस लेख में प्रस्तुत की हैं। अन्य घटनायें भी यही कहानी कहती हैं कि आर्यसमाजियों को सरकारी नौकरी से हटाया गया व उन्हें प्रताड़ित किया गया। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में आर्यसमाज में शीर्ष नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्यों को सन्देश देते हुए अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक में कहा था कि आर्य पुरुषो! क्या तुमको परमात्मा पर सच्चा विश्वास नहीं है? यदि है तो फिर दो हाथवालों की खातिर सहस्त्रबाहु का क्यों अनादर करते हो? दो भुजावाला जिस रोजी को छीन सकता है क्या सहस्त्रबाहु उससे बढ़कर रोजी तुम्हें दे नहीं सकता? इसलिये संसार को धर्म पर न्यौछावर करना ही आर्यत्व है। वैदिक धर्म की सेवा के लिए कायरों के उद्यत होने का क्या काम?

आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री जी लिखते हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के चेतावनी भरे इन ओजस्वी शब्दों ने बिजली का सा असर किया। इसके परिणामस्वरूप अनेक असह्य कष्ट आने पर भी आर्यसमाजी अपने निश्चित तथा स्वीकृत मार्ग से विचलित होने का विचार तक मन में भी नहीं कर सके। यह उस महान् सर्वस्व त्यागी तथा अवसर की नाड़ी को पहचानने वाले दूरदर्शी नेता के नेतृत्व की महान् सफलता थी जिसने मझधार में डूबने को तैयार आर्यसमाज की नैया को कुशल मल्लाह बनकर पार लगाने का साहसपूर्ण कार्य तथा वीरतायुक्त ऐतिहासिक कार्य किया। अन्धकार में भटक रहा आज का आर्यसमाज ऐसे निःस्पृह, दूरदर्शी नेतृत्व की आशा में है। ❑❑

अब इंसाफ कहाँ मिलेगा ? (पृष्ठ ११ का शेष)

अपनाने का आग्रह किया था। विडम्बना कमाल देखिये सहानुभूति भरा रवैया अपनाया भी गया। बताया जा रहा है कि सुनवाई करते हुए महज १० सेकेंड के भीतर अदालत ने दिल्ली हाई कोर्ट और निचली अदालत के उस फैसले को भी पलट दिया जिसमें दोषियों के लिए फांसी की सजा सुनाई गई थी। इस केस के तीनों आरोपियों को बरी कर दिया। इस फैसले से लड़की की माँ बेहद आहत नजर आई और कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने हमारी न्याय की आस तोड़ दी है, अब किसी पर भरोसा नहीं रहा।

फैसले के साथ ही पीड़ित परिवार एक अंधेरे भरी दुनिया में जा फंसा जहाँ सिर्फ न्याय ही उनकी जिंदगी में रोशनी ला सकता है। लेकिन वो न्याय उनके लिए अन्याय बन गया। क्योंकि सवाल रह गये कि अगर इन आरोपियों को इज्जत के साथ बरी किया गया है यानि ये दोषी नहीं है तो फिर अपराध किसने किया? गैंगरेप किसने किया? क्या लड़की खुद दिल्ली से हरियाणा पहुँची ट्रेन की पटरी पर लेट गयी अपने सर के ऊपर खुद घड़ा दे मारा? शराब की बोतल के टूटे कांच से खुद को जख्मी किया गरम औजारों से खुद को जलाया? फिर अपनी आँखें फोड़ डाली और उनमें तेजाब डाल लिया? अगर नहीं तो फिर आरोपी क्यों छोड़े गये? क्या वह लोग कम दिमाग के हो सकते हैं जिन्हें ये पता था कि गाड़ी के साइलेंसर से औजार गरम हो जायेंगे? यानि फैसले के साथ ये सवाल रह गये और साथ ही वह पंक्ति एक बार फिर गूंज उठी कि जब इंसाफ ही जालिमों के हक में जाएगा, ये हाल रहा तो कौन अदालत में जाएगा? ❑❑

• जो धर्म को जानने की इच्छा करें, उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है ।

कर्मफल सिद्धान्त –

–प्रस्तुति : ऋतु शास्त्री (मो०–८७०८२५७९४५)

एक मादा बिच्छू की मृत्यु बहुत ही दु:खदायी रूप में होती है। मादा बिच्छू जब बच्चों को जन्म देती है, तब ये सभी बच्चे जन्म लेते ही अपनी माँ की पीठ पर चढ़ जाते हैं और अपनी भूख मिटाने हेतु तुरन्त ही अपनी माँ के शरीर को ही खाना प्रारम्भ कर देते हैं, और तब तक खाते हैं, जब तक कि केवल उसकी अस्थियाँ ही शेष न रह जाएँ।

वो तड़पती है, कराहती है, लेकिन ये पीछा नहीं छोड़ते और ये उसे पल भर में नहीं मार देते बल्कि कई दिनों तक यह मौत से बदतर असहनीय पीड़ा को झेलती हुई दम तोड़ती है। मादा बिच्छू की मौत होने के पश्चात् ही ये सभी उसकी पीठ से नीचे उतरते हैं।

इस कुचक्र में ऐसी असंख्य योनियाँ हैं, जिनकी स्थितियाँ अज्ञात हैं, कदाचित् इसीलिए भवसागर को अगम और अपार कहा गया है।

शास्त्रों व संतमत के अनुसार यह भी मनुष्य योनि में किए गये कर्मों का ही भुगतान है। अर्थात् इन्सान इस मनुष्य जीवन में जो कर्म करेगा, नाना प्रकार की असंख्य योनियों में इन कर्मों के आधार पर उसे दु:ख-सुख मिलते रहेंगे, यह बिल्कुल निश्चित है ।

मानव जीवन बड़ा दुर्लभ है, ये गलियों में जो लावारिस जानवर घूम रहे हैं न, ये भी कभी मनुष्य थे... इनमें से कोई डॉक्टर था, कोई इंजीनियर, तो कोई वकील....।

इनको भी ईश भक्तों ने, संतों ने, सन्ध्योपासना का जाप करने को कहा था, तब ये कहते थे हम ईश्वर को नहीं मानते और सभी हंस कर जवाब देते थे कि अभी हमरे पास समय नहीं है। दुर्भाग्य से ये सब मनुष्य जन्म सफल न कर सके । ईशोपासना कभी की नहीं, प्रभु का धन्यवाद तक नहीं किया कभी इन्होंने, और अब पशु योनि में आ गए हैं।

अब देखो समय ही समय है, बेचारे गली-गली लावारिसों के जैसे घूमते हैं, कोई दुत्कारता है... कोई फटकारता है... तो कोई लाठी मारता है।

कर्म बहुत रुला देते हैं, किसी को भी नहीं छोड़ते... अरे भाई अब भी समय है, अब नहीं समझोगे तो कब समझोगे ! योनि बदलने के बाद....? ❑❑

बेटी पढ़ाओ.....(पृष्ठ २१ का शेष)

आदि क्षेत्रों में आज भारत की बेटियां भारत के नाम को देश और विदेश में चमका रही हैं। उनकी इस सफलता के पीछे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला देवराज जी तथा आर्य समाजियों का पुरुषार्थ व त्याग तपस्या छिपी हुई है। यह आर्यसमाज की नारी सशक्तिकरण तथा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ आन्दोलन को महत्त्वपूर्ण देन है। ❑❑

क्रांतिवीर... (पृष्ठ १७ का शेष)

कैदियों ने इस प्रकार की घोषणा किये जाने के बाद ३० अगस्त को भूख हड़ताल समाप्त कर दी। इसके पश्चात् समूहों में सेलूलर जेल के राजनैतिक बन्दियों का स्थानांतरण प्रारम्भ हो गया। १८ जनवरी १९३८ तक सभी (३००) राजनैतिक बन्दियों को सेलूलर जेल से वापस भेज दिया गया।" (पृ० ८९-९०)

क्या ये सभी माफीवीर थे? ❑❑

आर. एन. आई. नं० १६३३०/६७
Post in Delhi R.M.S
०५-११/१२/२०२२
भार ४० ग्राम

दिसम्बर २०२२

रजिस्टर्ड नं० DL (DG -11)/8029/2021-23
लाईसेन्स नं० यू (डी०एन०) १४४/२०२१-२३
Licenced to post without prepayment
Licence No. U (DN) 144/2021-23

पाठकों से निवेदन

१. अपने पत्रों में अपनी ग्राहक संख्या अवश्य ही लिखा करें, अन्यथा कार्यवाही सम्भव नहीं होगी।
२. १५ तारीख तक प्रतीक्षा करके ही दुबारा अंक मँगाएँ, यदि अंक न पहुँचा हो।
३. यदि आप अपना पता बदलवायें तो यह ध्यान रखें कि बदले हुए पते पर अंक-प्रेषण एक माह बाद आरम्भ होगा।
४. अंक के रेपर पर अपना पता चैक कर लिया करें। यदि कोई त्रुटि हो, तो सूचना दे दिया करें।
५. जिन ग्राहकों का शुल्क समाप्त है, अविलम्ब भेजने की कृपा करें।

–दिनेश कुमार शास्त्री
कार्यालय व्यवस्थापक
मो०-९६५०५२२७७८

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60	
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50	
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100	
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100	
उपहार संस्करण	₹1100	₹750	
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130	
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170	

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

छपी पुस्तक/पत्रिका

श्री सेवा में.....
ग्राम.....
डा०.....
जिला.....

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक धर्मपाल आर्य, स्वामित्व आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४२७, गली मन्दिर वाली, नया बांस, खारी बावली, दिल्ली-११०००६ से प्रकाशित एवं तिलक प्रिंटिंग प्रेस, २०४६, बाजार सीता राम, दिल्ली-११०००६ से मुद्रित।

॥ ओ३म् ॥

दयानन्दसन्देश

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का मासिक पत्र

इस अंक में

Date of Printing = 05-12-22
प्रकाशन दिनांक = 05-12-22

दिसम्बर २०२२

वर्ष ५२ : अङ्क २
दयानन्दाब्द : १९८
विक्रम-संवत् : कार्तिक-मार्गशीर्ष २०७९
सृष्टि-संवत् : १,९६,०८,५३,१२३

संस्थापक : स्व० ला० दीपचन्द आर्य
प्रकाशक व
सम्पादक : धर्मपाल आर्य
व्यवस्थापक : विवेक गुप्ता

कार्यालय :

दयानन्दसन्देश (मासिक)
४२७, मन्दिर वाली गली, नया बांस,
खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : २३९८५५४५, ४३७८११९१
चलभाष : ९६५०५२२७७८
E-mail : aspt.india@gmail.com

कुल पृष्ठ २८
एक प्रति १५.०० रु०

वार्षिक शुल्क १५०) रुपये
पंचवर्षीय शुल्क ५००) रुपये
आजीवन शुल्क ११००) रुपये
विदेश में ५०००) रुपये

- वेदोपदेश २
- बलि प्रथा अभी भी जिन्दा है ३
- मनुष्य शरीर-एक घोड़ा गाड़ी ५
- पुरुष सूक्त में पशु सृष्टि विषयक ६
- मृत्यु का अद्‌भुत दृश्य ९
- अब इंसाफ कहाँ मिलेगा ? १०
- शांति की खोज १२
- एक देश दो विधान आखिर क्यों ? १३
- क्रांतिवीर विनायक दामोदर सावरकर १५
- आओ, श्रद्धामय हो जाएं १८
- बेटी पढ़ाओ, देश धर्म बचाओ २०
- ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव २२
- आर्यसमाज का तप २४
- कर्मफल सिद्धान्त- २७

विशेष : दयानन्द सन्देश में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनसे सम्पादक की पूर्णतया सहमति आवश्यक नहीं है। अतः किसी भी चर्चा/परिचर्चा एवं वाद-विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

सत्यार्थप्रकाश

प्रचार संस्करण – ४००० रुपये सैकड़ा
स्पेशल (सजिल्द) – ६००० रुपये सैकड़ा में प्राप्त करें।